

# Eli, Eli, lama sabachthani

A Reply to Objection Mullana Sana Ullah Amritsari

By

**Allama Barakat Ullah**

**1957**

एली एली लमा शबतक़नी

ایلی ایلی لما شبتکّنی



عَلَامَةُ بَرَكَاتِ اللَّهِ

अल्लामा बरकत-उल्लाह





1891-1972

The Venerable Archdeacon

# Rev. Barkat Ullah

M.A.F.R.A.S

Fellow of the Royal Asiatic Society London

## यादगार

बरादर-ए-खुर्द नेअमत-उल्लाह मैनेजर अखबार उखुवत, लाहौर की यादगार में

आपने अपनी उम्र गराँमाया हक़ और खिदमत-ए-खल्क़ खातिर वक़फ़ कर दी

और 24 फरवरी 1907 ई. खुदावंद के दिन अले-अल-सुबह

खुदावंद में आराम से सो गए।

**बरकत-उल्लाह**

## फ़ेहरिस्त मज़ामीन

फ़ेहरिस्त मज़ामीन .....	4
दीबाचा तबअ अक्वल .....	6
दीबाचा तबअ सानी .....	8
<b>बाब अक्वल .....</b>	<b>9</b>
मुखालिफ़ीन के एतराज़ात .....	9
मौलवी सना-उल्लाह तौहीन मसीह के मुर्तकिब .....	12
मौलवी सना-उल्लाह साहब का मुनाज़राना रंग .....	16
वाक़िया सलीब-ए-मसीह और कुरआन .....	16
<b>बाब दोम .....</b>	<b>18</b>
मौलवी सना-उल्लाह साहब के एतराज़ात की खामी .....	18
मौलवी सना-उल्लाह साहब की तफ़सीर .....	18
मौलवी साहब की इख़फ़ाए हक़ की कोशिश .....	19
मौलवी साहब की तफ़सीर सही उसूल के ख़िलाफ़ .....	23
मौलवी सना-उल्लाह साहब की तफ़सीर अनाजील के नक़ीज़ (ख़िलाफ़) है .....	24
सय्यदना मसीह के अक्वाल .....	25
अल्लाह तआला की शहादत .....	25
इब्ने-अल्लाह (मसीह) का तर्ज़-ए-अमल .....	26
इन्जील की क़तई नस .....	34
मौलवी साहब की तफ़सीर कुरआन के मुखालिफ़ .....	37
<b>बाब सोम .....</b>	<b>40</b>
आया ज़ेरे बहस का मफ़हूम .....	40
फ़स्ल अक्वल .....	40
बाईसवां ज़बूर .....	40

बाईस्वीं (22) ज़बूर की शान-ए-नुज़ूल .....	40
इस ज़बूर का मतलब .....	41
सीगा वाहिद का इस्तिमाल .....	43
एली, एली, लमा शबकतनी का मफ़हूम .....	45
फ़स्ल दोम .....	50
आया ज़ेरे बहस और इब्ने-अल्लाह .....	50
सय्यदना मसीह ने इस आयत की तिलावत क्यों की? .....	50
इख़्तिलाफ़-ए-क़िरआत .....	59
आया ज़ेरे बहस और मसअला कफ़ारा .....	60
आया ज़ेर-ए-बहस और मसअला तजस्सुम .....	61
मौलवी साहिबान से अपील .....	64
मौलवी सना-उल्लाह और मसीह की दुआ-ए-मग़िफ़रत .....	68

## दीबाचा तबअ अक्वल

आया शरीफा “एली एली लमा शबकतनी” (ایلی ایلی لما شبتنی) (ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?) इन्जील जलील की उन मादूद-ए-चंद (बहुत थोड़ी तादाद में) आयात में से है जिन पर मुखालिफ़ीन उमूमन एतराज़ किया करते थे। पस हमने इस रिसाले में इस आयत पर मुफ़स्सिल बहस की है ताकि उन मोअतरज़ीन (एतराज़ करने वाले) की तश्फ़ी खातिर हो जाए जो सिदक-ए-नीयत से इस का सही मफ़हूम समझने से कासिर हैं। हमें उम्मीद है कि ऐसे नाज़रीन ग़ौर से इस रिसाले को पढ़ कर उन तमाम हवालेजात का मुतालआ करेंगे जिनका ज़िक्र दौरान-ए-बहस में किया गया है।

हमने मौलवी सना-उल्लाह साहब अमृतसरी को इस रिसाले में अपना मुखातिब बनाया है क्योंकि आपको शुमाली हिंद के मुसलमानों में ख़ास शौहरत हासिल है और पचास साल से ज़ाइद अर्से से मैदान-ए-मुनाज़रा में नबरद आजमाई (मुक़ाबला) करते रहे हैं। चुनान्चे वो खुद फ़र्माते हैं, “कि मेरी उम्र पच्चीस साल से मुतजाविज़ (ज़्यादा) थी जब मैं तहसील इल्म से फ़ारिग हो कर बालिग-उल-इल्म हुआ और 1892 ई. में मेरी दस्तार बन्दी<sup>1</sup> हुई थी।” (अहले-हदीस 29 जनवरी 1924 ई.) हमने एक शख्स को अपना मुखातिब बनाया है, जिसको मुसलमान अपना नुमाइंदा समझते हैं। हमें अफ़सोस से कहना पड़ता है कि हम मौलवी साहब मौसूफ़ को मुत्लाशियां हक़ (तलाशे हक़ करने वाले) के ज़मुरा में नहीं पाते क्योंकि उनकी किताब “इस्लाम और मसीहियत” में जिसका इस रिसाले में जा-ब-जा हवाला दिया गया है हमको तलाशे हक़ की तड़प नज़र नहीं आती। पस अगरचे वो मुत्लाशियान-ए-हक़ (हक़ की तलाश करने वाले) की सही मअनी में तर्जुमानी नहीं करते और ना कर सकते हैं ताहम वो मुनाज़राना रंग में आया करीमा पर मुख्तलिफ़ पहलूओं से एतराज़ करते हैं और उन के एतराज़ात का तसल्ली बख़्श जवाब हक़ के मुतलाशी के लिए कारआमद हो सकता है। पस गो ज़ाहिरी तौर पर हमारे

<sup>1</sup> मुसलमान रउसा की एक रस्म जिसमें मरने वाले रईस के बड़े बेटे को पगड़ी बंधाते हैं। या दीनी मदरसा के फारिग-उत-तहसील तलबा को फ़ज़ीलत के तौर पर पगड़ी बंधाते हैं।

मुखातिब मौलवी साहब मौसूफ हैं ताहम हमारा रू-ए-सुखन दर-हकीकत ऐसे अहबाब की तरफ है जो जुस्तजूए हक में सरगर्दा हैं।

हम दस्त बदुआ (दुआ के लिए हाथ उठाए हुए) हैं कि मौलवी साहब भी इस जुमरे में शामिल हो जाएं। यही वजह है कि हम दर्द-ए-दिल से बार-बार उनको तौबा की दावत देते हैं ताकि :-

زاں پیشترکہ بانگ برآید ثامنہ

मौलवी साहब हक की जानिब रूजू करें और मुनज्जी आलमीन के कदमों में आएँ जो “राह, हक और ज़िंदगी है” और खाकसार की तरह निजात-ए-अबदी से बहरमंद हों।

अनारर कली, बटाला

अहकर-उल-इबाद

**बरकत-उल्लाह**

15 नवम्बर 1945 ई.

## दीबाचा तबअ सानी

मौलवी सना-उल्लाह साहब की किताब “इस्लाम और मसीहियत” 1940 ई. में शाएअ हुई। हमने अखबार उखुव्वत लाहौर में इस का जवाब 1941 ई. में लिखा और इस के जवाब-उल-जवाब का इंतिज़ार करते रहे लेकिन मौलवी साहब ने मरते दम तक चुप (खामोशी) साध ली।

चार साल तक इंतिज़ार करने के बाद हमने इस रिसाले में वो तमाम मज़ामीन शाएअ कर दिए जिनका ताल्लुक (मर्कुस 15:34) यानी “और तीसरे पहर को येसू बड़ी आवाज़ से चलाया कि इलोही इलोही लिमा शबकतनी? जिस का तर्जुमा है, ऐ मेरे खुदा ऐ मेरे खुदा तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?” से था। मौलवी साहब अभी जिंदा थे लेकिन उनसे इस रिसाले का कोई जवाब ना बन पड़ा। अब 1957 ई. में इस की दूसरी ऐडीशन शाएअ की जाती है। इस ऐडीशन से वो तमाम मुकामात खारिज कर दिए गए हैं जिनका ताल्लुक मर्हूम की शख्सियत से था।

मेरी दुआ है कि ये रिसाला उन सबको इब्ने-अल्लाह (मसीह) की सलीब के नज़्दीक ले आए जो हक की तलाश में सरगर्दा हैं ताकि वो भी मेरी तरह नजात-ए-अबदी से बहरूर हो जाएं।

हैनरी मार्टिन स्कूल, अलीगढ़

25 मार्च 1957 ई.

**बरकत-उल्लाह**

## बाब अव्वल

# मुखालिफ़ीन के एतराज़ात

मुकद्दस मर्कुस की इन्जील में वारिद है :-

“जब दोपहर हुई तो तमाम मुल्क में अंधेरा छा गया और तीसरे पहर तक रहा तीसरे पहर को सय्यदना ईसा बड़ी आवाज़ से चिल्लाए कि इलोही इलोही लिमा शबकतनी? जिसका तर्जुमा है, ऐ मेरे खुदा ऐ मेरे खुदा आपने मुझे क्यों छोड़ दिया? जो पास खड़े थे उनमें से बाअज़ ने ये सुनकर कहा देखो वो इल्यास (एलियाह) को बुलाते हैं। एक ने दौड़ कर सपंच को सिरका में डुबोया और सरकंडे पर रखकर आपको चुसाया और कहा ठहर जाओ। देखें तो इल्यास इन्हें उतारने आता हैं या नहीं। फिर सय्यदना ईसा ने बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर दम दे दिया। बैत-उल्लाह (हैकल) का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। सूबेदार आपके सामने खड़ा था उसने आपको यूँ दम देते हुए देखकर कहा बेशक ये आदमी खुदा का बेटा है।”

(मर्कुस 15:33 ता 39)

मज़कूर बाला आयात की बिना पर इन्जील जलील के बाअज़ मुखालिफ़ीन एतराज़ करके इन आयात से ये नतीजा अख़ज़ करते हैं कि नाउज़ु-बिल्लाह (अल्लाह के पनाह نُوذُو ٱللّٰه) सय्यदना मसीह को खुदा ने सलीब पर छोड़ दिया था और आप जांकनी की हालत (जान निकलने की हालत) में इलाही रिफ़ाक़त से महरूम थे।

एक और एतराज़ ये किया जाता है कि चूँकि मुनज्जी कौनैन (मसीह) को खुद आख़िरी दम कुर्बत-ए-खुदावंदी हासिल ना थी। आपकी मुबारक मौत बनी-आदम की नजात का वसीला नहीं हो सकती और ना आप खुदा का मज़हर हो सकते हैं। पस मसीही मसअला नजात और मसअला तजस्सुम बातिल हैं।

मौलवी सना-उल्लाह साहब मर्हूम ने मज़कूर बाला एतराज़ात अपनी किताब “इस्लाम और मसीहियत” में निहायत गुस्ताखाना अल्फ़ाज़ में बड़ी बेबाकी से किए हैं।

बमिस्ताक "नकल-ए-कुफ्र कुफ्रना बाशिंद" हम उनके आमियाना और सोकयाना अल्फाज़ को ज़ेल में नकल करते हैं :-

“एक तरफ़ तो मसीह की शख़िसियत को खुदा-ए-मुजस्सम बताया जाता है। जिसके मअनी ये हैं कि वो सब कुदरतों और ताकतों का मालिक है उधर उस को दुश्मनों के हाथों चोरों और डाकूओं की तरह सूली पर चढ़ाया जाता है जिस पर ये सादिक आता है कि सपने इंद्र राजा भिऊ जागत भिऊ कंगाल। मसीह इस आजिज़ाना हालत में सलीब पर लटके गोया ये शेअर पढ़ रहे हैं।

ज़ोफ़ ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया वर्ना हम भी आदमी थे काम के” (सफ़ा 103)

“ग़ालिब अलल-कुल होना खुदा तआला का खास्सा है और ग़ैर मुनफ़क (जुदाई के बग़ैर) है यानी किसी वक़्त या किसी आन में ये ग़लबा उस की ज़ात से अलैहदा नहीं हो सकता। फिर क्या वजह है कि वो दुश्मनों के हाथों मग़्लूब हो कर असीर (कैदी) हुआ। कांटों का ताज पहनाया गया। उस की पसली में भाला मारा गया। आख़िर उसने एली एली लिमा शबक़तनी कहते हुए सूली पर चिल्ला कर जान दी।” (सफ़ा 68)

“दुनिया की तारीख़ी कुतुब और मसीही अनाजील बिल-इतिफ़ाक़ शहादत देती हैं कि यहूद मसीह के साथ बड़ी सख़्ती से पेश आते रहे यहां तक कि उन्होंने आपके सर पर कांटों का ताज रखकर आपको सलीब पर चढ़ा दिया और हाथों में मेखें गाड़ दीं। इस हालत में येसू मसीह की ये फ़र्याद कि ऐ मेरे खुदा ऐ मेरे खुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया आपका सही मुक़ाम अबूदीयत (बंदगी, इबादत) मुतय्यन करने के लिए एक फ़ैसलाकुन जुम्ला है।”

“मसीहियत ने दुनिया के बहुत बड़े मुअज़िज़ और खुदा के मुकर्रब और मासूम नाकर्दा गुनाह बंदे को फांसी पर चढ़ा कर

गुनेहगारों की नजात का ज़रिया समझा। ऐसा करते हुए इस को ना तो अदल व इन्साफ़ का उसूल मानेआ आया और ना खुदा के रहम ने इस को इस जुल्म से बाज़ रखा।”

हमारे दिल में ये बात आई है कि हम येसू मसीह के इलाही औसाफ़ का नमूना तस्वीर की शकल में दिखाएं। शायर लोग अपने दिली जज़्बे और मुहब्बत अक्सर औकात लफ़्ज़ों में बयान करते हैं। मगर गाहे-गाहे (कभी-कभार) मुसत्विरो से तस्वीर-कशी की दरख्वास्त करते हुए कहा करते हैं :-

मुसत्विर खींच वो नक्शा जिसमें ये रसाई हो  
उधर तलवार खींची हो इधर गर्दन झुकाई हो

इसी बिना पर हम बा-दिल नाखवास्ता बकौल नसारा मसीह की शख्सियत इलाही का खौफ़नाक अंजाम तस्वीर में दिखाते हैं। मुसलमान नाज़रीन हमें माफ़ रखें क्योंकि मकरूह फ़ेअल का इतिहास कर रहे हैं। इन्जील मती में लिखा है कि येसू मसीह को सलीब पर चढ़ाया गया। उस के हाथों को तख़्ते के बालाई हिस्से के साथ मिला कर मेखें गाड़ी गईं और उस के सर पर कांटों का ताज पहनाया गया। इस हालत में उसने निहायत आजिज़ी वज़ारी के साथ चिल्ला कर जान दी। जिसका नक्शा अगले सफ़े की तस्वीर देखने से बखूबी मालूम हो सकता है।

इस इबारत के बाद मौलवी साहब ने एक निहायत करीह-उन्न-नज़र (काबिले नफ़रत) तस्वीर खींच कर उस के ऊपर लिखा है “ऐ मेरे खुदा ऐ मेरे खुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया।” (मक़ला दर इन्जील) और तस्वीर के नीचे मिसरा लिखा है :-

देखे मुझे जो दीदा इबरत-ए-निगाह है

और फिर लिखते हैं कि :-

“बा-इन्साफ़ नाज़रीन अगर इस तस्वीर को गौर से मुलाहिज़ा फ़रमाएँगे तो हमारी इस आवाज़ से मुत्फ़िक़ होंगे कि हम हस्बे मज़मून आया करीमा **لا احب الا افلين** ऐसी कमज़ोर शख्सियत

को खुदाई के लिए पसंद नहीं कर सकते बल्कि हमारा यकीन है कि कोई भी अहले-बसीरत इस को पसंद नहीं करेगा।

(इस्लाम और मसीहियत सफ़ा 131, 135, 107, ता 110)

“हमने अपनी किताब “इस्लाम और मसीहियत” में मसीह की तस्वीर के ऊपर जो फ़िक्रह नक़ल किया था इस से हमारी जो गर्ज़ थी उसे हम मन्तिकी इस्लाह में बताते हैं। ईसाईयों का मुसल्लिमा अक़ीदा ये है कि खुदा और मसीह में ग़ैर मुनफ़क़ इतिसाल चला आया है। ये मफ़हूम क़ज़ीया (तकरार) दाइमा मुतल्लका है। हमने ये फ़िक्रह नक़ल करके क़ज़ीया दाइमा मुतल्लका आम्मा का सबूत दिया था जो दाइमा मुतल्लका की नक़ीज़ (मुखालिफ़) है। आपको मालूम हो जाएगा कि ज़ात-ए-उलूहियत से मसीह का इतिसाल दाइमा मुतल्लका की सूरत में साबित नहीं है इस के बरअक्स क़ज़ीया मुतल्लका आम्मा की शक़ल में साबित है जो पहले क़ज़ीया की नक़ीज़ है।”

(अहले-हदीस बाबत माह जून 1942 ई॰)

मसीह के इस मक़ूले से साफ़ साबित होता है कि उलूहियत और ज़ात-ए-मसीह में लज़ूम (लाज़िम) की निस्बत ना थी बल्कि ज़ात-ए-उलूहियत मआज़ अल्लाह (अल्लाह की पनाह) इस शेअर की मिस्ताक़ थी :-

स्याह बुखती में कब कोई किसी का साथ देता है  
कि तारीकी में साया भी जुदा रहता है इन्सान

(अहले-हदीस 6 फरवरी 1942 ई॰)

**मौलवी सना-उल्लाह तौहीन मसीह के मुर्तकिब**

मौलवी साहब के मुन्दरिजा बाला अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर है कि उन के ज़ोअम में इस आया शरीफ़ा से इब्ने-अल्लाह (मसीह) की “आजिज़ी व ज़ारी” (इस्लाम और मसीहियत सफ़ा 108 वग़ैरह) साबित होती है। इस आयत की आड़ में आप आँखुदावंद मसीह की तौहीन और तज़हीक (मज़ाक बनाना) करने से ज़रा नहीं झिजके। (सफ़ा 107 ता 113) आपके इस ओछे (कमज़र्फ़) हथियार पर मिर्ज़ाई तक (जिनको मौलवी साहब हमेशा गुमरान कुन और गुमराह शूदा मानते रहे) अंगुशत बदनदाँ (दाँतों में उंगली देना, अफ़सोस या हसरत का इज़हार करना) हैं। चुनान्चे ऐडीटर साहब उर्दू रिव्यू आफ़ रीलिजियंस क़ादियान आपकी किताब पर रिव्यू करके लिखते हैं :-

“हज़रत मसीह मौऊद अलैहि सलातो वस्सलाम (यानी आँजहानी मिर्ज़ा साहब क़ादियानी) ने दरीदा दहन पादरीयों और ईसाई मुनाज़िरीन के इस्लाम और आँहज़रत ﷺ पर नापाक एतराज़ात का इल्ज़ामी जवाब देने के लिए जो बाइबल और ईसाईयों की दीगर तसानीफ़ से सय्यदना ईसा मसीह की सख़्त क़ाबिल एतराज़ शख़िसयत को पेश किया तो मौलवी सना-उल्लाह साहब और उन की कुमाश के दीगर मौलवियों ने आस्मान सर पर उठा लिया कि देखो मिर्ज़ा साहब ने हज़रत ईसा अलैहि-स्सलाम की तौहीन कर दी। लेकिन आज मौलवी साहब को एक ईसाई की किताबों का जवाब लिखना पड़ा तो आपने वही रंग इख़्तियार किया जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहि सलातो वस्सलाम (यानी मिर्ज़ा साहब) ने इख़्तियार फ़रमाया था। चुनान्चे सय्यदना ईसा मसीह के औसाफ़ का नमूना अल्फ़ाज़ की शक़ल में आपने (किताब के सफ़ा 55 से सफ़ा 113) तक ख़ूब दिखाया है। फिर इसी पर बस ना करते हुए आपने इसे तस्वीर की शक़ल में दिखाना भी ज़रूरी समझा। और सफ़ा 109 पर हज़रत सय्यदना ईसा मसीह को सलीब पर लटकता हुआ दिखाया है और नीचे किसी क़द्र तसरूफ़ करके ग़ालिब का ये मिसरा लिखा है :-

देखे मुझे दीदा इबरत निगाह हो

और इस तरह बक़ौल खुद एक मकरूह फ़ेअल का इर्तिकाब किया।” (सफ़ा 55 बाबत फरवरी 1942 ई.)

हम इन करीहा उन्न-नज़र शत रो तस्वीर बनाने वाले वहाबी मौलवी साहब की ज़हनियत पर हैरान हैं। आप अपनी किताब पर नाज़ाँ हो कर कहते हैं, “मैं अपने दिली खयाल का इज़हार करता हूँ कि अपनी जुम्ला तस्नीफ़ात में से दो किताबों की निस्बत मुझे ज़्यादा यकीन है कि खुदा इनको मेरी नजात का ज़रीया बनाएगा। इनमें से एक किताब “मुक़द्दस रसूल” है जो “रंगीला रसूल” के जवाब में है। दूसरी किताब यही “इस्लाम और मसीहियत” है। इसलिए मैं कह सकता हूँ :-

रोज़ क्रियामत हर किसे दर-दस्त गिर्द नामा  
मन नीज़ हाज़िर मे शूम ताईद कुरआँ दरबग़ल

(सफ़ा अलिफ़)

लेकिन जहां तक तौहीन, तज़हीक और तमसखर (मज़ाक) का ताल्लुक है मर्हूम की किताब इस रुसवाए आलम किताब “रंगीला रसूल” से कम नहीं है। फ़र्क सिर्फ़ ये है कि मौलवियों ने एक मुसन्निफ़ पर “शातिम रसूल” का फ़त्वा देकर मुसलमानों को इस क़द्र बरा-फ़र्-दख़ता कर दिया कि वो क़त्ल कर दिया गया। लेकिन मसीही कलीसिया कलिमतुल्लाह (मसीह) की ताअलीम और नमूने पर चल कर इस क्रिस्म का वतीरा (चलन) इख़्तियार नहीं करती। आप जैसे मौलवियों की नापाक कोशिशों ने मुसलमानों और ईसाईयों में (जिनकी बमूजब आया कुरआनी **ولتجدن اقرب همه مودة للذين آمنوا**) दोस्ती के लिहाज़ से करीब तरीन होना चाहिए था। (सूरह माइदा सफ़ा 85) ऐसा इफ़्तिराक़ (जुदाई, इख़्तिलाफ़) पैदा कर दिया है कि मुसलमान हज़रत रूह-उल्लाह (मसीह अल्लाह की रूह) की शान के खिलाफ़ तौहीन व तमसखर के कलिमात सुनकर ना सिर्फ़ टस से मस नहीं होते बल्कि उल्टा खुश हो कर ऐसे ईमान फ़रोश मौलवियों को काइद मानते हैं। इस क्रिस्म के हज़रात दावा करते हैं ताईद कुरआन का जो फ़रमाता है, “ऐ मुसलमानो! तुम कहो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाए हैं और कुरआन जो हम पर उतरा। और उस पर जो इब्राहिम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उस के बारह बेटों पर नाज़िल हुआ और उस किताब पर जो मूसा और ईसा

को मिली और जो दूसरे नबियों को उनके परवरदिगार की तरफ़ से मिला। हम उनके दर्मियान किसी भी किसी तरह का फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी एक ख़ुदा के मुतीअ (फर्माबर्दार) हैं।” (बकरह 130, 258, इमरान 78) इनको ये खयाल नहीं आता कि वो मसीह की तौहीन करने से मुहम्मद की ताज़ीम नहीं करते बल्कि उस की, उस के अल्लाह की और उस की किताब की भी तौहीन करते हैं? मर्हूम अपनी किताब के सर-ए-वर्क़ को कुरआनी आयत لا تجادلواهل الكتاب الابالتى احسن से मुज़य्यन करके अपनी तम्हीद में लिखते हैं कि :-

“खुदा ने हिदायत फ़रमाई है कहा अहले किताब के साथ बेहतरीन तरीक़ से मुनाज़रा किया करो”

(सफ़ा 12)

लेकिन इनके तौहीन व तज़हीक (मज़ाकिया) आमेज़ अल्फ़ाज़ इस कुरआनी आया के ज़द (खिलाफ) हैं। इस किस्म के उलमा हज़रत रूह अल्लाह (मसीह) की तौहीन कर के कुरआन और उस्वा हसना को तर्क करने और अहले-यहूद की जमईयत-उल-उलमा के जुमरे में शामिल होने के जुर्म के मुर्तकिब होते हैं। (मती 27:39 ता 45) हक़ तो ये है कि आँखुदावंद का तम्सखर और मज़हका (हंसी उड़ाना और मज़ाक बनाना) करके वो मोमिनीन के गिरोह से निकल कर यहूदी काहिनों, फ़कीहों, मुजरिम मस्लूबों बल्कि बुत-परस्त रूमी सिपाहीयों के ज़मुरे में जा शामिल होते हैं। فاعتبرواالوالالباب

पासबाँ मिल गए काअबे को सनम-खाने से

इस किस्म के बे-बाक मोअतरिज़ भूल जाते हैं कि “अहले-यहूद पर उन के कुफ़र की वजह से ख़ुदा की फटकार और लानत है।” (निसा आयत 24) और कि “अल्लाह ने उन पर लानत की और उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल किया और उनमें से बाअज़ को बंदर और सूअर बना दिया।” (माइदा 65) वो ऐसों की पैरवी करके قسى القلب (माइदा आयत 12) हो जाते हैं। और इन ناحلف (मर्यम 60, आराफ़ 168) यहूद के ज़मुरे में दाखिल हो कर وجيهة في الدنيا والاخرة की तौहीन करके अपनी आखिरत को खराब कर लेते

हैं। इस कुमाश के लोग हश्र के रोज़ इस क्रिस्म की तौहीन आमेज़ किताब बग़ल में लेकर एक आदिल और (मुन्सिफ) के हुज़ूर हाज़िर होने की जुर्आत किस तरह कर सकेंगे?

## मौलवी सना-उल्लाह साहब का मुनाज़राना रंग

मौलवी साहब की किताब “इस्लाम और मसीहियत” का मुतालआ साबित कर देता है कि आप मुनाज़रे को तलाश-ए-हक़ का वसीला खयाल नहीं फ़र्माते थे। हाँ चंद एतराज़ात और दलाईल आपने रट रखे थे। जो वक़्त बेवक़्त, जा और बेजा आप अपनी तकरीर व तहरीर में पढ़ कर सुनाया करते थे। मर्हूम को इक़बाल भी है कि खाकसार किताबों में बहस “निराले तर्ज़” पर बसूरत जदीद की गई है बक़ौल हज़रत खुश :-

निराली बहस छिड़ी थी नया मुक़ाबला था

लेकिन जब आप जवाब लिखने बैठे तो वही पुराने मुल्लानों के दक़यानूसी (क़दीम) एतराज़ात जो आपने अय्याम-ए-जवानी में सीखे थे तोते की तरह पढ़ सुनाए। चुनान्चे क़ादियानी रिव्यू भी इस बात का शाकी (शिकायत करने वाला) है और कहता है कि :-

“पादरी साहब का अंदाज़-ए-बयान मुख्तलिफ़ था इसलिए ज़रूरी था कि उनके जवाब में भी उसी अंदाज़ को इख़्तियार किया जाता। लेकिन मौलवी साहब का अंदाज़ वही क़दीम मुनाज़राना है जिसके बयान में कोई नदिरत (उम्दगी, अनोखापन) नहीं।”

(फरवरी 1942 ई. सफ़ा 52)

درپس آئینه طوطی صفتم داشته اند

آنچه استاذ ازل گفت هماں میگوئم

## वाक़िया सलीब-ए-मसीह और कुरआन

लेकिन इस से कबल कि हम मौलवी साहब के एतराजात का जवाब दें हम मौलवी साहब से एक सवाल पूछना चाहते हैं जिसके जवाब पर उन के अपने दीन व ईमान का मदार है। आपने बिल्कुल सच्च फ़रमाया है कि :-

“दुनिया की तारीखी कुतुब और मसीही अनाजील बिल-इतिफ़ाक़ शहादत देती हैं कि यहूद मसीह के साथ बड़ी सख़्ती से पेश आते रहे। यहां तक कि उन्होंने आपके सर पर कांटों का ताज रखकर आपको सलीब पर चढ़ा दिया।”

(इस्लाम और मसीहियत सफ़ा 131)

ये अल्फ़ाज़ साबित करते हैं कि आपको इस बात का इक़बाल है कि मसीह का सलीब पर चढ़ाया जाना एक हकीकी और सच्चा तारीखी वाक़िया है क्योंकि बाअल्फ़ाज़-ए-शमा “दुनिया की तारीखी कुतुब और मसीही अनाजील बिल-इतिफ़ाक़ शहादत (गवाही) देती हैं” कि ये वाक़िया कोई मन घड़त अफ़साना नहीं और इस अम्र में उन लोगों को जो वाक़िया सलीब के मौक़े पर हाज़िर थे ना तो कुव्वत-ए-मुतख़य्युला (खयाल पैदा करने वाली कुव्वत, सोचने की कुव्वत) ने फ़रेब दिया था और ना कोई शख्स वहम और शुब्हा में गिरफ़्तार हुआ था। बल्कि ये एक तारीखी वाक़िया है जिसको मानने वाले गुमान और ज़न (शुब्हा, बोहतान, बद-गुमानी) की पैरवी नहीं करते बल्कि हक़ बात कहते हैं। लेकिन कुरआन दुनिया की तारीखी कुतुब और मसीही अनाजील की मुत्तफ़िका शहादत (गवाही) के खिलाफ़ कहता है “यहूद कहते हैं कि हमने ईसा बिन मर्यम रसूल अल्लाह को क़त्ल कर दिया हालाँकि ना उसे क़त्ल किया और ना उसे सलीब दी। लेकिन वो शुब्हा में पड़ गए और वो जो उस के बारे में इख़्तिलाफ़ रखते हैं उनकी निस्बत शक़ में हैं कि उनको इस का इल्म नहीं लेकिन वो गुमान की पैरवी करते हैं और यकीनन उस को क़त्ल नहीं किया बल्कि उसे खुदा ने अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है।” (सूरह निसा आयत 156)

पस कुरआन “दुनिया की तारीखी और मसीही अनाजील की मुत्तफ़िका शहादत (गवाही) के ऐन ज़िद वाक़िया सलीब का इन्कार करता है। चूँकि इल्म-ए-मन्तिक़ के रु से इज्तिमा-अल-ज़िददेन (आपस में इख़्तिलाफ़ का एक होना) महालात (नामुम्किन) में से है। पस या तो दुनिया की तारीखी कुतुब और मसीही अनाजील की मुत्तफ़िका शहादत

(गवाही) सच्ची है या कुरआन की शहादत (गवाही) सच्ची है। बसूरत अक्वल आप कुरआन और अपने ईमान का इन्कार करेंगे और बसूरत दोम दुनिया की तारीखी कुतुब की शहादत (गवाही) को काज़िब (झूटा) समझेंगे।

मुसीबत में पड़ा है सीने वाला चाक-दामाँ का  
जो ये टांका तो वो उधड़ा जो वो टांका तो ये उधड़ा

देखें मर्हूम मौलवी साहब के हम-खयाल अस्हाब क्या रवैय्या इख्तियार करते हैं।  
और कौन सी राह-ए-फ़रार तज्वीज़ फ़र्माते हैं।

## बाब दोम

### मौलवी सना-उल्लाह साहब के एतराज़ात की खामी

#### मौलवी सना-उल्लाह साहब की तफ़सीर

मर्हूम मौलवी साहब आयत ज़ेर-ए-बहस को इब्ने-अल्लाह (मसीह) से मन्सूब करके अपना ख़ास-उल-ख़ास एतराज़ अपने मख़सूस अंदाज़ में ब-ई अल्फ़ाज़ करते हैं :-

मसीह के इस मक़ूले से साफ़ साबित होता है कि उलूहियत और ज़ाते मसीह में लज़ूम की निस्बत ना थी। बल्कि ज़ात-ए-उलूहियत मआज़ अल्लाह (अल्लाह की पनाह) इस शेअर की मिस्ताक़ थी :-

सय बुखती में कब कोई किसी का साथ देता है  
कि तारीकी में साया भी जुदा रहता है इन्सान से

(अहले-हदीस 6 फरवरी 1942 ई.)

इस तमाम मज़मून का और मुन्दरिजा बाला एतराज़ का जो ब-तकरार पेश किया गया है माहसल (हासिल) ये है कि ये आयत ज़ाहिर करती है कि खुदा और मसीह में

इन्फिकाक (जुदा होना) और अलैहदगी थी। यानी खुदा मसीह से जुदा था और उसने मसीह को तर्क कर दिया था।

## मौलवी साहब की इख़फ़ाए हक़ की कोशिश

हमें अफ़सोस है कि मौलवी सना-उल्लाह साहब का ये एतराज़ ना सिर्फ़ उनकी मुनाज़राना हैसियत को बिट्टा (कमी) लगाता है बल्कि अख़लाकी पहलू से भी काबिल-ए-गिरिफ़्त है। आपने अपनी किताब और अपने अख़बार अहले-हदीस के मज़मून में जिस जिस जगह ज़ेर-ए-बहस आयत का ज़िक्र किया है आपने अपने नाज़रीन पर ये ज़ाहिर किया है, कि ये कलिमा (ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?) इब्ने अल्लाह (मसीह) का अपना मकूल है जो आपके मानी (मान करने वाला) अलज़मीर का इज़हार करता है। हालाँकि ये कलिमा आँखुदावंद का अपना मकूल नहीं। बल्कि ये आयत बाईस्वीं (22) ज़बूर की पहली आयत है जिसको आपने सलीब पर से इस मज़मूर का इब्रानी ज़बान में इक्तिबास करके तिलावत फ़रमाया। पस मौलवी साहब मर्हूम इस मुकाम पर इख़फ़ाए हक़ (हक़ को छिपाने) के मुर्तकिब हुए हैं और ये हरकत आपसे सहवन (भूल से) सादिर नहीं हुई बल्कि आपने दिदिया दानिस्ता (जान-बूझ कर) की है क्योंकि :-

**अव्वल** : आपका दावा है कि आप सहफ़-ए-मुक़द्दसा से बख़ूबी वाकिफ़ हैं। लिहाज़ा आपको ये ज़रूर मालूम होगा कि जो कलिमा इस आया शरीफ़ा में है वो इब्ने-अल्लाह (मसीह) का अपना मकूल नहीं बल्कि बाईस्वीं (22) ज़बूर की पहली आयत है।

**दोम** : बफ़र्ज़-ए-मुहाल अगर आपको ये इल्म नहीं था तो जिस इन्जील के सफ़ा पर से आपने इस आयत को नक़ल किया था उस सफ़ा के हाशिये ने आपको बतला दिया होगा कि ये आयत महज़ एक इक्तिबास है जो बाईस्वीं (22) ज़बूर की पहली आयत है।

**सोम** : आपको इन्जील जलील के मुताल्लिक़ हमादानी (पूरी मालूमात) का दावा है (किताब इस्लाम और मसीहियत सफ़ा 38) पस आप कम अज़ कम इस अम्र से (जिसको मसीही कलीसिया का बच्चा बच्चा जानता है) ज़रूर वाकिफ़ होंगे कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने खुदा को मुखातिब करते हुए कभी “खुदा या ऐ मेरे खुदा” नहीं कहा। बल्कि आप हमेशा खुदा को “अब्बा” (मर्कुस 14:36) “ऐ मेरे बाप, “मेरा बाप”, “मेरा

आस्मानी बाप”, (मत्ती 11:25, मर्कुस 13:32, मत्ती 7:21, 10:32, लूका 2:49, मत्ती 16:17, 18:10 मत्ती 18:35 वगैरह-वगैरह) कह कर मुखातिब करते थे। अपनी ज़िंदगी की आखिरी रात आपने जो दुआ मांगी उस में भी खुदा को “ऐ बाप” ही कहा। (यूहन्ना 17 बाब) बल्कि सलीब पर से आपने जो सात कलिमात अपनी मुबारक ज़बान से फ़रमाए उनमें से पहले और आखिरी कलिमे (जिसके बाद ही आपने दम दे दिया) में आपने खुदा को मुखातिब करके “ऐ बाप” ही कहा। (लूका 23:34) पस मौलवी साहब ने इन्जील मत्ती में “एली एली लिमा शबक़तनी” पढ़ा तो आप जैसे नुक्ता-रस (तेज़ फ़हम) शख्स क्यों ना चौंक पड़े कि इस ख़ास मुक़ाम में सय्यदना मसीह “अब्बा” के बजाय “एली एली” क्यों कहते हैं? अगर आपने दर्याफ़्त करने की ज़हमत गवारा की होती तो आप पर ये ज़ाहिर हो जाता है कि ये मक़ूला इब्ने-अल्लाह (मसीह) का नहीं बल्कि आप ज़बूर शरीफ़ की आयत की तिलावत फ़र्मा रहे थे।

सय्यदना मसीह के सलीब पर के पहले और आखिरी कलिमात के अल्फ़ाज़ (लूका 23 34, 46) ही ऐसे चौंका देने वाले हैं कि हर साहिब-ए-अक़ल पर ये फ़ौरन ज़ाहिर हो जाता है कि ये मक़ूले सय्यदना मसीह के हैं। लेकिन आया ज़ेर-ए-बहस इस किस्म की तबइयत रखने वाले इन्सान की रुहानी हालत की तर्जुमान नहीं हो सकती और यह कि हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) का मक़ूला नहीं बल्कि ज़बूर की आयत है जो आप तिलावत फ़र्मा रहे थे।

**चहारुम :** आप जैसे इन्जील दान से ये मख़फ़ी (छिपी) ना होगा कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) की मादरी ज़बान इब्रानी नहीं बल्कि अरामी ज़बान थी। (मर्कुस 5:41, 7:34, 14:36 वगैरह) पस जब आपने इन्जील मत्ती में पढ़ा कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने सलीब पर से इब्रानी ज़बान में एक कलिमा फ़रमाया तो अगर आप ने वजह दर्याफ़्त की होती तो आपको मालूम हो जाता कि जिस तरह हिन्दुस्तान का कोई मोमिन मुसलमान हालत-ए-नज़ा (मौत के वक़्त) में कुरआनी सूरह यासीन की आयात अरबी ज़बान में तिलावत करता है इसी तरह इब्ने अल्लाह ने भी जांकनी की हालत में बाईसवीं (22) ज़बूर की पहली आयत ज़बूर शरीफ़ की अस्ल ज़बान इब्रानी में तिलावत फ़रमाई थी।

**पंजुम :** मुम्किन है कि बावजूद दाअवा हमादानी (सफ़ा 38) आप ये उज़्र लंग पेश करें कि आपको ये इल्म ही ना था कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) की मादरी ज़बान

आरामी थी, लेकिन आपको कम अज़ कम ज़बान अरबी की तारीख और इस्लामी तारीख से तो वाक़फ़ीयत थी। क्योंकि आप बड़े मौलवी और मौलवी फ़ाज़िल भी थे। आपकी किताब ने तो ये ज़ाहिर कर दिया कि मसीही कलीसिया की तारीख के मुताल्लिक आपके माखज़ सिर्फ बच्चों के इब्तिदाई मदरिज की कुतुब ही हैं। (सफ़ा 45, 46) लेकिन अरबी दानी का तो ये हाल नहीं होना चाहिए था कि अर्ज़-ए-मुक़द्दस में अरबी ज़बान की आमद से पहले अरामी ज़बान राइज थी जिसकी जगह अरबी ने ले ली थी।

ये ज़बान बाबुल की ज़बान थी जो कनआन में अहले यहूद के साथ आई थी। अहले यहूद की कुतुबे मुक़द्दसा के तराजुम और तफ़ासीर जिनको “तारगम” कहते हैं। इसी ज़बान में मुनज्जी आलमीन (मसीह) की बिअसत (रिसालत) से एक सदी पहले और एक सदी बाद के दौरान लिखे गए थे। यही ज़बान हज़रत कलिमतुल्लाह और आपके रसूलों की मादरी ज़बान थी। दसवीं सदी मसीही तक अहले-यहूद इसी ज़बान में किताबें लिखा करते थे। ये ज़बान तमाम पारथी सल्तनत में बोली जाती थी जिसकी हदूद दरिया-ए-सिंध से दरिया-ए-फ़ुरात तक और बहर हिंद से बहर कैस्पियन और कोह हिंदूकुश तक थीं। ये ज़बान इस क़द्र वसीअ रक़बा और दूर दराज़ के ममालिक में बोली जाती थीं कि मुअरिख यूसीफ़स ने अपनी किताब पहले अरामी ज़बान में तस्नीफ़ की थी ताकि बाबुल के मुल्क के रहने वाले और अरब के दौर उफ़तादा बाशिंदे और फ़ुरात के पार रहने वाले यहूदी और पारथी उस की किताब को पढ़ सकें। बाद में यूसीफ़स ने इस किताब को यूनानी ज़बान में उन लोगों की ख़ातिर जो रूमी सल्तनत में रहते हैं तर्जुमा किया था।<sup>2</sup>

अरब की फ़ुतूहात से एक हज़ार साल पहले मशरिक् में यही अरामी ज़बान मुहज़ज़ब दुनिया की ज़बान समझी जाती थी। हत्ता के ईरान जैसे दूर दराज़ मुल्क में भी ईरानी ज़बान की बजाय अरामी ज़बान ही तस्नीफ़ व तालीफ़ का ज़रीया थी। लेकिन इस्लामी फ़ुतूहात ने ये नक्शा बदल दिया और अरबी ने अरामी ज़बान पर ग़लबा हासिल कर लिया। पस आपको इस बात से नावाक़िफ़ नहीं होना चाहिए था कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) की मादरी ज़बान अरामी थी और इब्रानी फ़िक़्रह जो आपकी ज़बान मुबारक से निकला वो ज़बूर शरीफ़ की अस्ल ज़बान इब्रानी का इक़्तिबास था।

<sup>2</sup> See Max Muller, Lectures on the Science of Language Vol.1 Lecture 8 and Josephus, Wars of the Jews.

वजूहे बाला (ऊपर बयान की गई वजूहात) की बिना पर हम ये कह सकते हैं कि आप इख्फाए हक (हक छुपाने के) के उम्दन मुर्तकिब हुए हैं। क्योंकि गो आप को खुद मालूम था कि ये इब्रानी कलिमा बाईसवीं (22) ज़बूर का हिस्सा है। लेकिन आपने हर जगह अपने नाज़रीन पर यही ज़ाहिर किया है कि कलिमा खुद इब्ने-अल्लाह (मसीह) का अपना मकूल है जो उनके खयालात व जज़्बात का मज़हर है और यूं आपने लोगों को दीदा व दानिस्ता (जानबूझ कर) गुमराह किया। हर सही-उल-अक़ल शख्स एक काइल के अपने क़ौल और किसी दूसरे के कलाम में जिसका उसने इक्तिबास क्या हो तमीज़ कर सकता है और अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में तमीज़ करता है। मसलन अगर ज़ैद किसी को बतलाए कि बक्र ने हालत-ए-नज़ा (मौत के वक़्त) में सू़रह यासीन की आयत पढ़ी, **إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ** तर्जुमा, “यानी हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं और वो ठोढ़ियों तक फंसे हुए हैं तो उनके सर अफल कर रह गए हैं।” (सू़रह यासीन 7 तर्जुमा नज़ीर अहमद) तो कोई अक़ल और समझ रखने वाला शख्स इस अरबी कलाम को बक्र से मन्सूब करके नहीं कहेगा कि ये कलाम बक्र का अपना कलाम है। बल्कि हर शख्स जिसके सर में दिमाग़ और दिमाग में अक़ल है यही कहेगा कि ये अरबी कलाम कुरआनी आयत है जिसको बक्र बहालत-ए-नज़ा (मौत के वक़्त) तिलावत कर रहा था। एक और मिसाल से हम इस अम्र को वाज़ेह कर देते हैं। कुरैश कुरआन जो झुटला कर कहते थे कि कुरआन “परेशान ख़वाबों का मजमूआ है।” (अम्बिया 5 आयत) और वह “पहले लोगों की कहानियां” है। तब हज़रत ने बारगाह इलाही में फ़र्याद करके कहा था, “या अल्लाह मेरी क़ौम ने कुरआन को ठहराया झुक-झुक” (तकरार, बक बक) (फुर्कान आयत 32) अब मोअतरिज़ की सी अक़ल के मालिक ही ये कहेंगे कि रसूल अरबी का ये मकूल है कि कुरआन महज़ झुक-झुक (तकरार, बक बक) है। लेकिन हर साहिब-ए-होश यही कहेगा कि :-

ع  
بریں عقل و دانش بیاید گریست

पस आपने अपने मफ़रूज़ा (कि आयत ज़ेर-ए-बहस इब्ने-अल्लाह (मसीह) का अपना मकूल है) की बिना पर जो मंतिक्रियाना इस्तिदलाल की इमारत खड़ी की है। (इस्लाम और मसीहियत सफ़ा 68, अहले-हदीस बाबत 6 फरवरी 1942 ई. सफ़ा 3, 4 वगैरह) वो अज़-सर-तापा बे-बुनियाद है। मोअतरिज़ से तो यहूदी रब्बी कलासंर (Klaussner) ही अच्छे रहे जो अपनी ज़ैगम किताब “येसू नासरी” में इस कलिमे की

निस्बत फ़र्माते हैं कि “येसू सहफ़-ए-मुकद्दसा की रूह से इस कद्र मामूर था कि उसने सलीब पर अपनी जान देते वक़्त भी किताब-ए-मुकद्दस की आयत की तिलावत की।” (Jesus of Nazareth) काश कि मोअतरिज़ इन यहूद ही से जिनको कुरआन نحلف और قسى القلب वग़ैरह कहता है। हक़ और सदाक़त का सबक़ सीख लेते। मर्हूम डाक्टर इक़बाल ऐसे मोमिन मुसलमान की निस्बत ही फ़र्मा गए हैं :-

ये मुसलमाँ हैं जिन्हें देखकर शर्माएँ यहूद

काश कि मर्हूम मौलवी साहब इख़्फ़ाए हक़ (हक़ को छुपाने) से ये काम ना लेते और जीते जी खुद अपने फ़त्वा को याद रखते कि मज़हबी मुनाज़रात में जो खुदा की अदालत में पेश होते हैं वाक़ियात सहीहा का इख़्फ़ा (छुपाना) किसी तरह जायज़ नहीं है।” (सफ़ा 12) और कि मुंसिफ़ मिज़ाज लोग मज़हबी मुबाहसात में खासकर इख़्फ़ाए वाक़ियात करना जुर्म अज़ीम समझते हैं। (सफ़ा 23) आपने इख़्फ़ाए वाक़ियात (सहीहा वाक़ियात छुपाने) से काम लेकर एक “जुर्म अज़ीम” का इर्तिकाब किया।

## मौलवी साहब की तफ़सीर सही उसूल के खिलाफ़

मर्हूम मौलवी साहब को तफ़सीर नवीसी पर नाज़ था। इसी लिए बिचारे खलीफ़ा क़ादियान को आए दिन तफ़सीर नवीसी के लिए चैलेंज भी दिया करते थे। आपने एक रिसाला तफ़सीर बिल-राए लिख कर अपने मुखालिफ़ क़ादियानीयों, शीयों, लाहौरी मिर्जाईयों, नेचरी मुसलमानों वग़ैरह को उसूल-ए-तफ़सीर की ताअलीम भी दी है। पस हमें ताज्जुब आता है कि इन्जील जलील की आयात की तफ़सीर करते वक़्त उन्होंने सही उसूल-ए-तफ़सीर को पस-ए-पुशत क्यों फेंक दिया?

सही तफ़सीर के लिए लाज़िम है कि (1) कि वो किताब-उल्लाह की आयात-ए-बय्यनात के खिलाफ़ ना हो और कि (2) वो क़ाइल के अस्ल मफ़हूम और हक़ीक़ी मंशा के खिलाफ़ ना हो और उस के खयालात, जज़्बात और अफ़आल के मुनाफ़ी (खिलाफ़) ना हो। वर्ना वो तफ़सीर अल-क़ोल बिमा लायर्ज़ा क़ाइला (القول بما لا يرشئ تألله) मुतसव्वर होगी। इस के बरअक्स लाज़िम है कि सही तावील कहने वाले के खयालात का आईना हो और

उस के जज़्बात की दुरुस्त तर्जुमानी करे और उस के अक्वाल व अफ़आल के मुताबिक़ हो और (3) किताब-उल्लाह की आयात इस तावील की मुसद्दिक़ हूँ।

अगर मर्हूम की ज़ेर-ए-बहस आयत की तावील दुरुस्त है तो लाज़िम था कि वो ये साबित करते कि उनकी तावील हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) के असली मफ़हूम और हकीकी मंशा और माअनी-उल-ज़मीर की सही तर्जुमानी करती है। (2) कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) के खयालात, जज़्बात, अक्वाल व अफ़आल जो अनाजील अरबा में पाए जाते हैं (बिलखुसूस वो जिनका ताल्लुक़ खुदावंद की ज़िंदगी के आखिरी हफ़ते के साथ है) सब ये ज़ाहिर करते हैं कि खुदा ने मसीह को तर्क कर दिया था और (3) इन्जील जलील की आयात इस बात की बय्यन शाहिद हैं कि खुदा मसीह से जुदा था। क्योंकि उसने आपको मआज़ अल्लाह (अल्लाह की पनाह) रद्द कर दिया था। अगर वो ये साबित कर सकते तो हम भी मान लेते कि तफ़सीर नवीसी में आप बाल की खाल उतारने वाले हैं।” (सफ़ा 51) लेकिन इन्जील की आयात-ए-बय्यनात और कलिमतुल्लाह (मसीह) के कलिमाते तय्यिबात से तो मोअतरज़ीन ताक़यामत ये साबित नहीं कर सकते। فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ और हरगिज़ ना कर सकोगे तो दोज़ख की आग से डरो जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और वो मुन्किरों के लिए तैयार है। (बकरह आयत 23)

## मौलवी सना-उल्लाह साहब की तफ़सीर अनाजील के नक़ीज़ (खिलाफ़) है

अनाजील अरबा का एक एक सफ़ा और इब्ने-अल्लाह (मसीह) की मुबारक ज़िंदगी का एक एक वर्क़ मौलवी साहब मर्हूम की तफ़सीर को ग़लत साबित करता है। चारों इंजीलों की एक एक आयत की बाल की खाल उतार लो। हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) के इर्शादात और कलिमात तय्यिबात को एक एक करके छान मारो। आपके खयालात जज़्बात और अफ़आल को एक एक करके देख लो तुमको किसी मुक़ाम पर ये ना मिलेगा कि खुदा ने इब्ने अल्लाह (मसीह) को तर्क कर दिया था। इस के बरअक्स इन्जील जलील की आयात-ए-बय्यनात से यही ज़ाहिर होता है कि अब्ब (बाप) और इब्न (बेटे) में इन्फ़िकाक (अलग होना) और जुदाई और मुगाइरत (बेगानगी, अजनबीयत) का

नामोनिशान भी नहीं। इस के बरअक्स हर वक़्त और हर जगह कामिल इतिसाल रिफ़ाक़त करुबत और इतिहाद नज़र आता है।

## सय्यदना मसीह के अक़वाल

किसी ने ख़ूब कहा है कि मन आनम कि मन दानम (من آئم که من دانم) इस मेयार से जब हम इब्ने-अल्लाह (मसीह) के अक़वाल पर नज़र करते हैं तो हमको यही दिखाई देता है कि ख़ुदा में और आप में रिफ़ाक़त, करुबत, इतिहाद और मुहब्बत का रिश्ता शुरु से आखिरी दम तक हमेशा कायम रहा। चुनान्चे इब्ने-अल्लाह (मसीह) फ़र्माते हैं कि बाप बेटे से मुहब्बत करता है, और उस की इज़ज़त करता है। (यूहन्ना 3:35, 14:21, 5:20, 8:54, 10:17, 15:19, 17:26) और “बेटा बाप से मुहब्बत करता है।” (यूहन्ना 15:10) “जो कुछ मेरा है वो बाप का है। और वो सब मेरा है।” (यूहन्ना 16:15, 17:10) “मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया है और कोई बेटे को नहीं जानता सिवा बाप के और कोई बाप को नहीं जानता सिवा बेटे के और उस के जिस पर बेटा ज़ाहिर करना चाहे।” (मत्ती 11:27, लूका 10:22 यूहन्ना 8:55, 10:15) आँखुदावंद फ़र्माते हैं कि “जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा।” (यूहन्ना 14:9) क्योंकि “मैं और बाप एक हैं।” (यूहन्ना 10:30) आपने फ़रमाया कि बाप की रिफ़ाक़त और उस के काम को पूरा करना आपका “खाना पीना” है। (यूहन्ना 4:32, 5:30 6:38) और कि आप ख़ुदा की तरफ़ से आए हैं और ख़ुदा के पास वापिस लौट जाएंगे। (यूहन्ना 7:29, 7:33, 8:23, 16:28, 20:17 वगैरह) क्या ये अल्फ़ाज़ (जिनमें अक्सर आपने अपनी ज़िंदगी के आखिरी हफ़्ते में बल्कि आखिरी रात फ़रमाए थे) किसी ऐसे शख्स की ज़बान से निकल सकते हैं जिसको ये खयाल हो कि ख़ुदा उस से नाराज़ है या वो मगज़ूब-ए-कहर इलाही (जिस पर ख़ुदा का गुस्सा हो) है या कि ख़ुदा ने उस को तर्क कर दिया है?

## अल्लाह तआला की शहादत

अगर मौलवी सना-उल्लाह साहब के खयाल में इब्ने-अल्लाह (मसीह) के मुन्दरिजा बाला कलिमात उनकी तावील को मुर्दा साबित करने के लिए काफ़ी नहीं तो वो चूँकि काल-अल्लाह (قال الله) और अतीउल्लाह (اطيعوا الله) के मानने वाले हैं और इतमाम-ए-

हुज्जत की खातिर उनकी पास-ए-खातिर हमें मंजूर है लिहाजा हम उनको बतलाते हैं कि खुद इर्शाद-ए-खुदावंदी साबित करता है कि खुदा ने इब्ने-अल्लाह (मसीह) को तमाम उम्र कभी तर्क नहीं किया था। बल्कि इस के बरअक्स खुदा ने बनाए आलम से पेशतर बेटे से मुहब्बत रखी।” (यूहन्ना 17:24) जब कलिमतुल्लाह (मसीह) मबऊस हुए तो इलाही इर्शाद हुआ, “ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।” (मती 3:17) इस आया शरीफा की बेहतरीन तफ्सीर (यसअयाह 42:1-4) में है। सलीबी वाकिये से चन्द हफ़ते पहले फिर इलाही इर्शाद होता है “ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ। उस की सुनो।” (मती 17:5) सलीब दीए जाने से चंद साअत पहले इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने कहा अब मेरी जान घबराती है पस मैं क्या कहूँ? ऐ बाप ! मुझे इस घड़ी से बचा? लेकिन मैं तो इसी सबब से इस घड़ी को पहुंचा हूँ। ऐ बाप अपने नाम को जलाल दे। पस आस्मान से आवाज़ आई कि “मैंने उस को जलाल दिया है और फिर भी दूँगा।” (यूहन्ना 12:27 ता 28) जिन शागिर्दों ने इन इलाही कलिमात को सुना वो शहादत देते हैं कि दूसरों के साथ उन्होंने खुदा की ये गवाही सुनी थी। (2 पतरस 1:17) और मुकद्दस यूहन्ना कहता है कि “खुदा की गवाही ये है कि उसने अपने बेटे के हक़ में गवाही दी है।” (यूहन्ना 5:9) खुद इब्ने-अल्लाह (मसीह) फ़रमाता है कि “बाप जिसने मुझे भेजा है उसी ने मेरी गवाही दी है।” (यूहन्ना 5:37) मौलवी साहब! खुदा से बड़ा तो कोई गवाह नहीं है और खुदा की गवाही आपकी तावील को (कि उसने इब्ने-अल्लाह (मसीह) को तर्क कर दिया था) मर्दूद करार देती है।

## इब्ने-अल्लाह (मसीह) का तर्ज-ए-अमल

इब्ने-अल्लाह फ़र्माते हैं कि आपकी आमद का वाहिद मक्सद ये है कि आप अपने बाप की मर्जी को पूरा करें और उस का काम सरअंजाम दें जो बाप ने आपके सपुर्द किया है। (यूहन्ना 4:34, 5:30, 6:38, 12:49, 15:10, मर्कुस 14:36, मती 26:39 ता 42 लूका 22:42) आप हमेशा इसी काम को सरअंजाम देने की धुन में रहते थे। (यूहन्ना 4:32 ता 34, 9:4, 14:31) और इस को पूरा करने पर तुले थे और इस की तकमील में किसी किस्म के खतरे की परवाह नहीं करते थे। (लूका 9:51, 12:50) यहां तक कि आपने इस काम को पूरा करके छोड़ा। (यूहन्ना 7:21, 8:29, 9:4, 17:14, 19:30) इब्ने-अल्लाह (मसीह) को ख़ूब मालूम था कि इस को सरअंजाम देने की राह में अहले-यहूद की रोज़-अफ़ज़ूँ बेईमानी और बर्ग़शतगी की वजह से आपको अन्वा व अक्साम की दिक्कतों

और दुशवारीयों का जान तोड़ मुक़ाबला करना होगा। आपके तजुर्बे ने आपको बतला दिया था कि आपकी क़ौम के क़ाइदों और सरदार काहिनों की खुसूमत दिन-ब-दिन तरक्की कर रही है। आपने अम्बिया-ए-सलफ़ और अपने हम-अस नबी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के अंजाम में (मत्ती 23:29, 23:37, 21:32 वगैरह) देख लिया था कि आपका अपना हश्र क्या होगा। (मत्ती 17:12 ता 13) सहफ़-ए-मुक़द्दसा के मुतालआ से (जैसा हम अपनी किताब “कलिमतुल्लाह की ताअलीम” में लिख चुके हैं) कलिमतुल्लाह को यकीन हो गया था कि यसअयाह नबी के सहीफे के “खादिम-ए-यहोवा” के तसव्वुर के मिस्ताक़ आप ही हैं। (लूका 22:37, 4:21) लेकिन ये सब बातें आपके पहाड़ जैसे ज़बरदस्त और मुसम्मम (मजबूत) इरादे को ना बदल सकीं और आप ने ये ठान ली कि हरचेबादअबाद आप इस काम को पूरा करके छोड़ेंगे जिसके वास्ते बाप ने आपको दुनिया में भेजा था। (मत्ती 20:28, मर्कुस 10:45) ख़्वाह ऐसा करने में आपको अपनी जान-ए-अज़ीज़ भी कुर्बान करनी पड़े। (यूहन्ना 10 बाब) पस आपने अपनी अज़ीयत और मस्लूब होने की बाबत अपने शागिर्दों को इत्तिला दी। (मत्ती 16:21, 17:9, 21, 22, 23 व 40, 20:19 26:2, 12, 13, 32 मर्कुस 9:8 ता 13, 31 10:33, 34 14:24, 26, 15:16 ता 20, लूका 9 22, 44, 12:50, 13:32, 17:25, 18:31 ता 34, 22:63 ता 66, 23:1 ता 33, 24:21 यूहन्ना 10:15 ता 18, 16:16, 20:9 वगैरह) इस के साथ ही इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने अपने शागिर्दों को ये भी बतला दिया कि अहले यहूद आपकी खातिर उनको भी तरह तरह की ईज़ाएं (तकलीफें) पहुंचाएंगे और उन को क़त्ल करेंगे। (मत्ती 24:9 ता 13, 5:10 ता 11, 10:16 ता 32, 23:34 ता 36, 24:8 ता 12, मर्कुस 13:9, 12, 13 लूका 10:3, 11:49, 17:33, 21:12, 16, 17, यूहन्ना 15:20, 21, 16:2 ता 4 वगैरह) लेकिन जिस तरह कुरआन और दौर-ए-हाज़रा के मुसलमान ये बात गवारा नहीं कर सकते कि खुदा का प्यारा नबी मक़तूल व मस्लूब हो और कहते हैं कि **وماقتلوه وماصلبو** इसी तरह शागिर्द भी ये बात गवारा ना कर सके और उन में से एक ने कहा, “ऐ खुदावंद, खुदा ना करे, ये तुज़्ज़ पर हरगिज़ नहीं होने का।” पर इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने उसे समझाया कि सलीब की राह दर-हकीक़त हुदा (खुदा) की राह है और फ़रमाया कि “तू खुदा की बातों का नहीं बल्कि आदमीयों की बातों का खयाल रखता है।” और अलल-ऐलान फ़रमाया “अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपनी खुदी से इन्कार करे और अपनी सलीब उठाए और मेरे पीछे हो ले क्योंकि जो कोई अपनी जान बचानी चाहे वो उसे खोएगा और जो कोई मेरे वास्ते अपनी जान खोएगा वो उसे पाएगा। वो वक़्त आ गया है कि इब्ने आदम जलाल

पाए मैं तुमसे सच्च सच्च कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना ज़मीन पर गिर के मर नहीं जाता वो अकेला रहता है लेकिन जब मर जाता है तो बहुत सा फल लाता है। इब्ने आदम का ऊंचे पर चढ़ाया जाना ज़रूर है और जब मैं ऊंचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सबको अपने पास खींचूँगा।” (मत्ती 16:12 ता 27, यूहन्ना 12:23 व 24, 32 ता 34) आपने शागिर्दों को ख़बरदार करके फ़रमाया लोग तुमको ईज़ा देने के लिए पकड़वाएंगे और तुमको क़त्ल करेंगे। मगर जो आख़िर तक बर्दाश्त करेगा वही नजात पाएगा।” (मत्ती 24:8 ता 12)

मौलवी साहब को ये खयाल ना आया कि जो शख्स अपने शागिर्दों को “मरते दम तक” वफ़ादार रहने की तल्कीन करता है। (मत्ती 10:22) वो खुद भी “आख़िर तक बर्दाश्त” करेगा। कलिमतुल्लाह (मसीह) ने अपने हवारियों को फ़रमाया था कि ईज़ा और मुसीबत के वक़्त वो खुदा पर भरोसा रखें। (मत्ती 10:19 व 29, मर्कुस 13:11) और ईज़ा पहुंचाने वालों के लिए दुआ-ए-ख़ैर करें। (मत्ती 5:44) आपने क्यों ना सोचा कि जो शख्स अपनी ताअलीम पर चल कर सलीब पर से अपने दुश्मनों के लिए दुआ-ए-मग़ि़रत मांगता है वो खुद उसी सलीब पर ज़रूर खुदा पर भरोसा रखेगा? वो जो दूसरों को कहता है “खातिरजमा रखो मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ। मैं अपना इत्मीनान तुमको देता हूँ।” (यूहन्ना 16:33) खुद क़ल्बी इत्मीनान से किस तरह महरूम हो सकता है? नाज़रीन ही इन्साफ़ से बतलाएं कि हज़रत इब्ने-अल्लाह (मसीह) बाप की रिफ़ाक़त और इत्मीनान पाए बग़ैर किस तरह ऐसे कलिमात अपने मुँह से निकाल सकते हैं? अगर खुदा ने मसीह को तर्क कर दिया होता तो वो किस तरह खुद मुत्मइन हो कर ऐसे तसल्ली बख़श कलिमे फ़र्मा सकते हैं? नाज़रीन ने हज़रत अय्यूब का नाम ज़रूर सुना होगा। जब उस पर मसाइब व अलाम (दुःख मुसीबत) का पहाड़ टूट पड़ा तो वो खुदा से बहस करता है और खुदा को मौरिद-ए-इल्ज़ाम गर्दान कर उस को अपना दुश्मन और अपने आप को बेगुनाह करार देता है। वो कहता है कि खुदा जानता है कि मैं बे-गुनाह हूँ ताहम वो बेइंसाफ़ी से मुझको तर्क करता है और ख्वाह-मख्वाह मुझको मुजरिम करार देने पर तुला है। अय्यूब कहता है कि खुदा गोया **صُمِّبِكُمْ** (गूँगा बहरा) आस्मान पर बैठा है ना सुनता है ना जवाब देता है और ना मेरी वावेली की पर्वाह करता है। नाज़रीन खुदारा इन्साफ़ से कहना क्या आपको मसीह मस्लूब का वतीरा अय्यूब का सा नज़र आता है? क्या सलीब पर इब्ने-अल्लाह (मसीह) के किसी क़ौल या फ़ेअल से किसी साहिब-ए-होश के दिमाग़ में

ये खयाल भी आ सकता है कि मुनज्जी आलमीन का ईमान आखिरी वक़्त में एक लम्हा या लम्हा के किसी हिस्से के लिए भी मुतज़लज़ल हो गया था?

मौलाना ने ज़रा गौर व फिक्र करके ये खयाल तो किया होता कि हर किस्म की अज़ीयत, मुसीबत और अज़ाब को सब्र और मुहब्बत के साथ बर्दाश्त कर लेने के बाद जब इन तमाम मसाइब अकूबत (दुख) और अज़ाब का खातिमा होने वाला था तो क्या दम-ए-वापसी (आखिरकार) मसीह मस्लूब का ईमान मुतज़लज़ल हो सकता था? क्या ऐसे वक़्त यास और ना उम्मीदी इब्ने-अल्लाह (मसीह) पर इस क़द्र ग़ालिब आ सकती थी कि वो खयाल करते कि खुदा ने उनको तर्क कर दिया है? उनकी तो ये ताअलीम थी कि “खुदा पर ईमान रखो।” (मर्कुस 11:22) और वो अपने इसी ईमान के बाइस मस्लूब भी किए गए थे तो क्या खुदा ऐसे ईमानदार को छोड़ सकता था? क्या खुदा का वतीरा है कि वो अपने ईमानदार बंदों को ऐन उनकी हाजत के वक़्त तर्क कर दिया करता है और वह भी ऐसे ईमानदार को जो करोड़ों के “ईमान का बानी और कामिल करने वाला” हो। (इब्रानियों 12:2) ऐसे ईमानदार का ईमान किस तरह मुतज़लज़ल हो सकता था? फ़्रांसीसी आलिम डाक्टर एल्फ़र्ड लवाज़ी (जो रासिख-उल-एतकाद मसीही नहीं था) इन अल्फ़ाज़ की निस्बत कहता है<sup>3</sup> :-

“ये अल्फ़ाज़ खुदा से दूरी और ना उम्मीदी को ज़ाहिर नहीं करते। ये एक रास्तबाज़ शख्स की चीख पुकार है जो दर्द व क्रब में मुब्तला है लेकिन इस बात पर ईमान रखता है कि खुदा-ए-कुद्दूस की मुहब्बत और हिफ़ाज़त मौत में भी उस को चारों तरफ़ घेरे हुए है।”

डाक्टर वनसंट टेलर के अल्फ़ाज़ :-

“ये<sup>4</sup> नज़रिया कि खुदा ने येसू को छोड़ दिया था। अब इस काबिल नहीं रहा कि इस का ज़िक्र भी किया जाये।”

<sup>3</sup> Loisy, Le Evangiles Synoptiques.

<sup>4</sup> Life and Ministry Of Jesus p.143 in Vol .7 of the Interpreter's Bible.

जर्मन आलिम डीपलस कहता है कि :-

“इस फ़िक्रह से ये ज़ाहिर नहीं होता कि खुदा ने मसीह को छोड़ दिया था या मसीह को ऐसा मालूम देता था कि खुदा ने उस को छोड़ दिया है बल्कि हक़ तो ये है कि कोई भी दीनदार यहूदी मरते दम इस आयत को पढ़ते वक़्त ये खयाल भी दिल में नहीं ला सकता था कि खुदा ने उस को छोड़ दिया<sup>5</sup> है।”

नाज़रीन, लिल्लाह, (खुदा के वास्ते) ज़रा इन्साफ़ करें। क्या खुदा का इन्साफ़ इस बात का मुतकाज़ी हो सकता था कि वो इब्ने-अल्लाह (मसीह) के साथ ऐसा सुलूक करे जो वो इन्जील जलील के मुताबिक़ बदतरीन गुनेहगारों से भी नहीं करना चाहता? (यूहन्ना 3:16, लूका 15:7) खुदा की मुहब्बत किस तरह इस बात की मुतकाज़ी हो सकती थी कि वो ऐसे तारीक़ वक़्त में अपनी रोशनी को इस से बाज़ रखती? मुनज्जी आलमीन (मसीह) गुनाह और शैतान पर ग़ालिब आए लेकिन आपने आखिरी दम उनसे शिकस्त खा कर फ़त्ह हासिल नहीं की थी। इस के बरअक्स दम-ए-वापसी के वक़्त भी खुदा की हुज़ूरी और कुर्बत (नज़दिकी) के एहसास की वजह से आप शैतान पर मौत की तल्खी के वक़्त ग़ालिब आए और आप ने आस्मान की बादशाहत सारे मोमिनीन के लिए खोल दी।

इन्जील जलील से ये साबित है कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने मस्लूब होने से पेशतर एक एक बाकी पेशगोई के तौर पर पहले से अपने शागिर्दों को खबर दी थी। चुनान्चे इस मुख़िबर-ए-सादिक़ ने फ़रमाया था “तुम सब इसी रात मेरी बाबत ठोकर खाओगे। लेकिन मैं अपने जी उठने के बाद तुमसे पहले गलील को जाऊँगा और मुक़द्दस पतरस को मुखातिब करके फ़रमाया था इसी रात मुर्ग के बाँग़ देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” “तुम में से एक जो मेरे साथ खाना खाता है मुझे पकड़वाएगा।” “देखो हम यरूशलेम को जाते हैं और इब्ने आदम सरदार काहिनों और फ़कीहों के हवाले किया जाएगा और वो उस के क़त्ल का हुक़म देंगे और उसे ग़ैर-क़ौमों के हवाले करेंगे और वो उसे ठट्ठों में उड़ाएंगे और उस फिर थूकेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और क़त्ल करेंगे

<sup>5</sup> Dibelius. From Tradition to Gospel pp.193 -194

और तीन दिन के बाद वो जी उठेगा।” (मर्कुस 10 बाब, मती 20 बाब वगैरह) लेकिन आपने उनको ये ख़बर कभी ना दी कि ख़ुदा बाप भी मुझे तर्क कर देगा। इन्जील जलील के किसी लफ़्ज़ से हमको ये पता नहीं मिल सकता कि ख़ुदावंद के नज़दीक कभी ये खयाल भी फटका (लम्हा) हो कि ख़ुदा आपको छोड़ देगा। इस के बरअक्स गतसमनी बाग में जांकनी (नज़ा की हालत, अज़ीयत) की हालत का एक एक लफ़्ज़ ये ज़ाहिर करता है कि आपको कामिल यकीन था कि ख़ुदा की कुर्बत (नज़दिकी) अकमल तौर पर इस अज़ाब के वक़्त आपका साथ देगी।

नाज़रीन आप कोहे कलवरी पर निगाह करें और तीनों मस्लूबों को देखें। क्या आपको तीनों के तीनों मस्लूब ख़ुदा के रद्द किए हुए नज़र आते हैं? क्या मसीह मस्लूब का वतीरा वही है जो बाक़ी दो डाकूओं का है? ये डाकू तो मानते हैं कि वो “अपने कामों का बदला पा रहे हैं और उनकी सज़ा वाजिबी है।” (लूका 23:41) क्या मोअतरिज़ इब्ने-अल्लाह (मसीह) की दुश्मनी में इन डाकूओं से भी ज़्यादा कसी-उल-कल्ब (संगदिल قسى القلب) हो गए हैं। इनमें से एक डाकू ताइब हुआ तो इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने फ़रमाया “आज ही तू मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा।” (लूका 23:43) क्या एक शख्स जो ख़ुद ख़ुदा की रिफ़ाक़त से जुदा हो चुका हो दम-ए-वापसी किसी दूसरे गुनेहगार के गुनाह माफ़ करके उस को उसी रोज़ अपने साथ जन्नत में दाखिल होने की बशारत दे सकता है?

सच्य तो ये है कि ख़ुदा की पिदराना मुहब्बत इब्ने-अल्लाह (मसीह) की तमाम ज़िंदगी-भर आपका वाहिद सहारा थी। आपको इस लाज़वाल अबदी मुहब्बत का एहसास इस क़द्र था कि दुनिया की कोई आफ़त आपके जीते-जी उस को महव ना कर सकी बल्कि सलीब पर से आपने आखिरी लफ़्ज़ जो अपनी ज़बान-ए-मुबारक से बयान फ़रमाए, ये थे “ऐ बाप मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ और यह कह कर दम दे दिया।” (लूका 23:42) मोअतरिज़ ने कुछ तो ग़ौर किया होता। क्या ये अल्फ़ाज़ मरते दम किसी ऐसे शख्स के मुँह से निकल सकते हैं जिसको ये खयाल हो कि ख़ुदा ने उस को छोड़ दिया है? अगर ख़ुदा ने इब्ने-अल्लाह (मसीह) को फ़िलवाके तर्क कर दिया था और सलीब पर से उनकी तमाम ज़िंदगी का काम मालिया-मेट (खत्म) हो गया था तो वो अपने आखिरी दम फ़ातिहाना अंदाज़ से बड़ी आवाज़ से पुकार के क्यों ऐलान करते हैं कि ख़ुदा का वो काम जो उसने इब्ने-अल्लाह (मसीह) के सपुर्द किया था पूरा हुआ। (यूहन्ना 19:30) और यह तमाम अल्फ़ाज़ कुछ ऐसे अंदाज़ से ब-आवाज़-ए-बुलंद फ़रमाए गए कि

सख्त दिल रूमी सूबेदार तक मुतास्सिर हो गए। (लूका 23:47), लेकिन मोअतरिज़ हकीकत की तरफ़ से आँखें बंद करके हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) की शान में बेअदबी करने से ज़रा नहीं झिजकते और कहते हैं कि “मसीह इस आजिज़ाना हालत में सलीब पर लटकते हुए गोया ये शेअर पढ़ रहे हैं :-

ज़अफ़ ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया  
वर्ना हम भी आदमी थे काम के

(सफ़ा 103)

हर इन्जील ख़वान हज़रत इब्ने-अल्लाह (मसीह) की ज़िंदगी की आखिरी साअतों का हाल पढ़ कर देख सकता है कि “आजिज़ाना हालत” और “ज़अफ़” आँखुदावंद के पास फटके भी ना थे। आप फ़ातिहाना अंदाज़ में सरदार काहिन को फ़र्माते हैं “अब से इब्ने आदम कादिर-ए-मुतलक़ खुदा की दहनी तरफ़ बैठा रहेगा।” (लूका 22:69) और मैं इस सतूदा (खुदा) का बेटा मसीह हूँ और “तुम इब्ने आदम को कादिर-ए-मुतलक़ की दहनी तरफ़ बैठे और आस्मान के बादिलों के साथ आते देखोगे।” (मर्कुस 14:62) और गवर्नर पिलातूस को मुखातिब करके कहते हैं “मैं हक़ का बादशाह हूँ। मैं इसलिए पैदा हुआ और इस वास्ते दुनिया में आया हूँ कि हक़ पर गवाही दूँ। जो कोई हक़क़ानी (हक़ से निस्बत रखने वाला) है वो मेरी आवाज़ सुनता है।” (यूहन्ना 18:37 ता 38)

इब्ने-अल्लाह (मसीह) फ़र्माते हैं कि आपका इस दुनिया में आने का वाहिद मक़सद ये था कि आप खुदा की मर्ज़ी को पूरा करें। आपने अपनी ज़िंदगी का एक एक लम्हा बाप की मर्ज़ी को पूरा करने में सर्फ़ किया। (यूहन्ना 5:20, 5:30, 6:37, 7:16, 12:10, 19:32 वगैरह) अपनी ज़िंदगी की आखिरी शब आपने खुदा से इल्तिजा कर के कहा था “ऐ बाप, मेरी मर्ज़ी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी हो।” अब जब वो खुदा के इरादे और मंशा और मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़रमांबदारी से मौत बल्कि सलीबी मौत को बर्दाश्त करके खुदा की मर्ज़ी को पूरा कर रहे हैं तो खुदा उनसे किस तरह जुदा हो सकता है? उनकी दुआ के अल्फ़ाज़ साफ़ ज़ाहिर करते हैं कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) की नज़रों के सामने सलीब थी और मौलवी साहब के क्रियास (सफ़ा 190) के खिलाफ़ इब्ने-अल्लाह के ख़्वाब व ख़्याल में भी ये बात ना आई थी कि खुदा किसी ख़वारिक़-ए-आदत (मोअजिज़ा) तौर पर आपको सलीबी मौत से बचाएगा। क्योंकि वह जानते थे कि सलीब की राह ऐन खुदा की मर्ज़ी के

मुताबिक्र है। (मत्ती 16:21 ता 28) पस अगर मौलवी साहब की तफ़्सीर सही है तो हमारा ये हक़ है कि हम उनसे पूछें कि इन बातों के पेश-ए-नज़र होने के बावजूद इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने क्यों एक ऐसा कलिमा ज़बान से निकाला जिससे बक़ौल आपके यास ना उम्मीदी टपकती थी? उनका फ़र्ज़ है कि वो हमको बतलाएं कि यास और ना उम्मीदी किस चीज़ की निस्बत थी? वो क्या उम्मीद थी जो बर ना आई और जिस के पूरा ना होने के बाइस ये यास-अंगेज़ (मायूसी भरा) कलिमा बक़ौल मोअतरिज़ इब्ने-अल्लाह के मुँह से निकला? इब्ने-अल्लाह (मसीह) तो अपने तजुर्बे से जानते थे कि आप दुनिया और शैतान पर ग़ालिब आ गए हैं। (मत्ती 4:11, यूहन्ना 16:33 वगैरह) दरिं हाल (इस सूत्र में) दम-ए-वापसी ना-उम्मीदी और यास (मायूसी) की क्या वजह थी? क्रियास तो ये चाहता है कि एक शख़्स पर जो बक़ौल मौलवी साहब ज़ारी लाचारी की आजिज़ाना हालत में सलीब पर लटका हो मायूसी उसी क़द्र ग़ालिब होगी कि उस की यास (मायूसी) और ना उम्मीदी की आवाज़ धीमी निकलेगी। लेकिन इब्ने-अल्लाह की बुलंद और “बड़ी आवाज़ की पुकार” (लूका 23:42, मत्ती 27:50, मर्कुस 15:37) ये साबित करती है कि ना-उम्मीदी, मायूसी और यास सलीब के नज़दीक फटकने भी ना पाई थी। बल्कि ये बड़ी आवाज़ की पुकार एक फ़ातिहाना आवाज़ थी जो जिस्म की कमज़ोरी और अज़ीयत के बावजूद इलाही रिफ़ाक़त और कुर्बत (नज़दिकी) की वजह से बुलंद थी जिसको सुनकर सूबेदार भी मरऊब हो कर मान गया कि “बेशक ये आदमी रास्त बाज़ था”। (लूका 23:47)

सुतूर बाला में हम ज़िक्र कर चुके हैं कि आखिरी शब गतसमनी बाग़ में इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने अपने आपको खुदा के हाथों में सपुर्द कर दिया था और कहा था “ऐ बाप! मेरी मर्ज़ी नहीं बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी हो।” जिससे आपका मतलब महज़ “गर्दन बरज़ा-ए-इलाही” को महज़ सर-ए-तस्लीम ख़म करने से पूरा नहीं कर सकता बल्कि इलाही इरादे और मंशा के साथ ख़याल क़ौल और फ़ेअल से बदिल व जान अमली तआवुन करने से पूरा करता है। (यूहन्ना 12:27 ता 28) यही वजह है कि आपने दुआ ख़त्म करने के बाद ही शागिर्दों को इर्शाद फ़रमाया “उट्ठो चलें।” (मर्कुस 14:42) ताकि खुदा की मर्ज़ी को पूरा करें और मौत को खुदा की मुहब्बत और उस के जलाल का वसीला बनाएँ। (लूका 24:26) आप मुद्दत से इस मौत के पियाले के मुंतज़िर थे। और जाम-ए-शहादत को पीने के ख़्वाहिशमंद थे। (मत्ती 21:22) आपने अलल-ऐलान (गवाहों के रूबरू, अलानिया तौर पर) फ़रमाया था कि “मुझे (सलीबी) मौत का बपतिस्मा लेना है। और जब तक वो ना हो

ले मैं बहुत ही तंग रहूँगा।” (लूका 12:50) क्योंकि आपको ये इल्म था कि आपकी मौत भी आपकी ज़िंदगी की तरह “बहुतों के फ़िदये” के लिए ज़रूरी और लाज़िमी है। (मर्कुस 10:45) आपने अपनी मौत की वजह बतला कर फ़रमाया “वो वक्त आ गया कि इब्ने आदम जलाल पाए। मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना ज़मीन में गिर कर मर नहीं जाता अकेला रहता है। लेकिन जब मर जाता है तो बहुत सा फल लाता है। जो अपनी जान को अज़ीज़ रखता है वो उसे खो देता है और जो दुनिया में अपनी जान से अदावत रखता है वो उसे हमेशा की ज़िंदगी के लिए महफूज़ रखेगा।....पस मैं क्या कहूँ कि ऐ बाप मुझे इस घड़ी से बचा? लेकिन मैं इसी सबब से तो इस घड़ी को पहुंचा हूँ। ऐ बाप अपने नाम को जलाल दे। पस आस्मान से आवाज़ आई कि मैंने उस को जलाल दिया है और फिर भी दूँगा।” (यूहन्ना 12:23 ता 28) मोअतरिज़ को ज़रा खयाल ना आया कि इस किस्म के शख्स के मुँह से किस तरह दम-ए-वापसी कोई यास अंगेज़ (मायूसी भरा) कलिमा निकल सकता है?

## इन्जील की क़तई नस

मौलवी साहब, आईए हम आपको इब्ने-अल्लाह (मसीह) के वो कलिमात तय्यिबात सुनाएँ जो आपके वहम के खिलाफ़ एक क़ातेअ और क़तई दलील हैं। आप तो बग़ैर किसी दलील के दावा करते हैं कि खुदा ने इब्ने-अल्लाह (मसीह) को तर्क कर दिया था, लेकिन सुनिए इब्ने-अल्लाह खुद यहूद को क्या फ़र्माते हैं, आपने इर्शाद फ़रमाया “मैं अकेला नहीं बल्कि मैं हूँ और बाप है जिसने मुझे भेजा है।” (यूहन्ना 8:16) फिर बताकिद फ़रमाया, “जिसने मुझे भेजा है। वो मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा।” और साथ ही वजह भी बतला दी, “क्योंकि मैं हमेशा वही काम करता हूँ जो उसे पसंद हैं।” (यूहन्ना 9:29) फिर आपने अपनी ज़िंदगी की आखिरी शब शागिर्दों को फ़रमाया, “तुम सब परागंदा हो कर अपने अपने घर की राह लगे और मुझे अकेला छोड़ दोगे। तो भी मैं अकेला नहीं हूँ क्योंकि बाप मेरे साथ है।” (यूहन्ना 16:32) क्या ये इंजीली नस क़तई तौर पर आपके एतराज़ का मुँह बंद नहीं कर देती? बाप की मुहब्बत आपको हर लहज़ा चारों तरफ़ ज़िंदगी में हर लम्हा मौत में घेरे रही। आप खुदा को मुखातिब करके फ़र्माते हैं कि “ऐ बाप मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली और मुझे तो मालूम है कि तू हमेशा मेरी सुनता है।” (यूहन्ना 11:41) और इब्रानियों के ख़त का मुसन्निफ़ इस पर

सादिर करके कहता है कि, खुदा ने ज़िंदगी और मौत दोनों हालतों में इब्ने-अल्लाह (मसीह) की सुनी। (इब्रानियों 5:7 ता 8) और उस का रफ़ीक़ रहा।

मुक़द्दस पौलुस रसूल भी फ़रमाता है कि “खुदा अपनी मुहब्बत की ख़ूबी हम पर यूँ ज़ाहिर करता है, कि जब हम गुनेहगार ही थे तो मसीह हमारी खातिर मुआ। पस हम अपने सय्यदना मसीह के सबब जिसके वसीले से अब हमारा खुदा के साथ मेल हो गया खुदा पर फ़ख़्र करते हैं।” (रोमीयों 5:8 ता 11) अब मौलवी साहब ही फ़रमाएं कि अगर खुदा ने ऐन सलीब के मौके पर मसीह मस्लूब को छोड़ दिया था तो उसने अपनी मुहब्बत की ख़ूबी का इज़हार किस तरह किया? और हम किस बात पर और किस तरह फ़ख़्र कर सकते हैं?

इस सिलसिले में डाक्टर बर्टक के अल्फ़ाज़ काबिल गौर हैं वो कहता है :-<sup>6</sup>

“हम जानते हैं कि दीनदार यहूदी मुसीबत के वक़्त इस ज़बूर को पढ़ कर तसल्ली हासिल किया करते थे। ये अम्र यकीनी है कि इन अल्फ़ाज़ की तिलावत से ये ज़ाहिर नहीं होता कि सय्यदना मसीह अपना ईमान खो बैठे थे और कि खुदा की रिफ़ाक़त आप को नसीब ना थी। बल्कि हक़ तो ये है कि अगरचे सब आपको छोड़कर चले गए थे लेकिन खुदा आपके साथ था। और इस से पहले आपको खुदा की ऐसी कुर्बत (नज़दिकी) कभी हासिल ना हुई थी जैसी इस लम्हा में हासिल थी। जब आप खुदा की कामिल फ़रमांबर्दारी करके अपनी जान कुर्बान कर रहे थे। खुदा बाप ने अपने बेटे को इस लम्हे में ऐसी कुर्बत (नज़दिकी) अता की थी कि वो मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर रहा था।” (2 कुरिन्थियों 5:13)

मुक़द्दस पौलुस को मसीह मस्लूब के ईसार, मौत और कुर्बानी में खुदा का मक्सद नज़र आता है चुनान्चे वो फ़रमाता है कि “खुदा ने मसीह में हो कर अपने साथ

<sup>6</sup> George A. Buttrick

Exegesis and Exposition of St. Matthew in vol 7 of the Interpreter's Bible pp.608 -609

दुनिया का मेल मिलाप कर लिया।” (2 कुरिन्थियों 5:8) देखिए अल्फ़ाज़ “ख़ुदा ने मसीह में हो कर” कैसे साफ़ वाज़ेह और ग़ैर मुबहम हैं। ख़ुदा ने मसीह से जुदा हो कर और उस को तर्क करके नहीं बल्कि “मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर लिया।” जिसका मतलब ये है कि सलीबी मौत के वक़्त बाप इब्ने-अल्लाह (मसीह) के ज़रीये और उस में हो कर नजात का काम करता है। क्योंकि बेटा बाप का मज़हर है (इफिसियों 2:4 ता 5, गलतीयों 4:3 ता 6 वग़ैरह)

हक़ तो ये है कि ख़ुदा अपने बेटे से सलीब के मौक़े पर खासतौर पर ख़ुश था। क्योंकि ख़ुदा की मुहब्बत का नज़ारा हमको आला तरीन जलाली सूरत में सलीब पर ही मिलता है। ख़ुदा मुहब्बत और सय्यदना मसीह की ज़िंदगी और मौत इस मुहब्बत के जलाल का कामिल और अकमल ज़हूर हैं। इब्ने-अल्लाह (मसीह) मुजस्सम मुहब्बत थे। आपने अपनी मुहब्बत का इज़हार खल्क की खिदमत, इसार-ए-नफ़्स और कामिल कुर्बानी के ज़रीये किया। (मत्ती 20:28, मर्कुस 10:45, 10:17 ता 18, 13:1 ता 7, 3:13, 21, 4:34, 5:17, 44, 8 बाब 17:1 वग़ैरह) जिस तरह इब्ने-अल्लाह (मसीह) की ज़िंदगी ईसार के ज़रीये ख़ुदा की मुहब्बत का ज़हूर थी जिसके वसीले सब पर अयाँ हो गया था कि “ख़ुदा उस के साथ है।” (आमाल 10:38) इसी तरह आपकी मौत ईसार व मुहब्बत का सबूत थी और मौत के वक़्त भी ख़ुदा आप के साथ था क्योंकि आप महबूब-ए-किब्रिया थे। (मत्ती 3:17, 17:5) चुनान्चे आपने फ़रमाया कि “बाप मुझसे इसलिए मुहब्बत रखता है कि मैं अपनी जान देता हूँ। कोई उसे मुझसे छीनता नहीं, बल्कि मैं उसे आप ही देता हूँ।” (यूहन्ना 1:17 ता 18) आपकी मुबारक मौत आपकी ज़िंदगी का कमाल और ताज थी। जब ख़ुदा ने आपकी ज़िंदगी में आपका साथ ना छोड़ा तो वो आपकी मौत में आपको कैसे छोड़ सकता था? बिलखुसूस जब ये मुबारक मौत आपकी ज़िंदगी का कमाल थी? आपने ज़िंदगी और मौत दोनों में अपनी जान दूसरों के लिए निसार कर दी। (1 यूहन्ना 3:16, मत्ती 20:28) जिस तरह बनी-इस्राईल को कोहे सीना पर पुराने अहदनामे का जलवा नज़र आया उसी तरह कोहे कलवरी पर इलाही मुहब्बत के कमाल के लिए अहद का जलवा नज़र आता है। सलीब पर का तजुर्बा इब्ने-अल्लाह (मसीह) के ईमान और कामिलियत का ज़हूर है। (फिलिप्पियों 2:8 ता 11) इब्रानियों के ख़त का मुसन्निफ़ हमको बतलाता है कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) की नज़रों के सामने ना उम्मीदी और यास (मायूसी) नहीं बल्कि एक अजीब खुशी थी और कहता है कि “हमारे ईमान के बानी और कामिल करने वाले येसू ने उस खुशी के लिए जो उस की नज़रों के सामने थी शर्मिंदगी

की परवाह ना करके सलीब का दुख सहा और खुदा के तख्त की दहनी तरफ जा बैठा।” (इब्रानियों 12:2) इब्ने अल्लाह (मसीह) की निगाह इस “खुशी” पर टिकी हुई थी। (ज़बूर 119:35) जिसकी वजह से आपने सलीब की इतिहाई शर्मिंदगी की परवाह ना की। ये खुशी क्या थी? इब्ने-अल्लाह (मसीह) अपनी ज़फ़रयाब (फ़त्हमंद) क्रियामत के बाद अपनी ज़बान-ए-मोअजिज़ा बयान से अपने शागिर्दों को और मर्हूम के हम-खयालों को इस खुशी की निस्बत बतलाते हैं, “ऐ नादानो और नबियों की सारी बातों के मानने में सुस्त एतकादों, क्या मसीह को ये दुख उठाकर अपने जलाल में दाखिल होना ज़रूर ना था?” (लूका 24:25) आप कामिल और मुजस्सम मुहब्बत थे और मुहब्बत ईसार का दूसरा नाम है। ईसार तब ही कामिल होता है जब उस में खुशी हो और यह खुशी ईसार का जलाल होती है। किसी माँ से पूछो कि वो अपने बीमार बच्चे को किसी दाया या नर्स के सपुर्द करने के बजाय उस की खिदमत में कुर्बानी और ईसार-ए-नफ़स से काम लेकर रात-दिन एक क्यों कर देती है? माँ की मामता की खुशी ऐसे ईसार और कुर्बानी में ही पूरी होती है और ये खुशी माँ की मुहब्बत ईसार का जलाल है। चुनान्चे इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने भी आखिरी शब अपने शागिर्दों को फ़रमाया “मैंने ये बातें इसलिए तुमसे कही हैं कि मेरी खुशी तुम में हो और तुम्हारी खुशी पूरी हो जाए। इस से ज़्यादा मुहब्बत कोई शख्स नहीं कर सकता कि अपनी जान अपने दोस्तों के लिए दे दे।” (यूहन्ना 15:13, यसअयाह 53:11) इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने जो दुआ आखिरी शब (रात) की थी उस में आपने खुदा को मुखातिब करके कहा “ऐ बाप, वो घड़ी आ पहुंची अपने बेटे का जलाल ज़ाहिर कर ताकि बेटा तेरा जलाल ज़ाहिर करे। जो काम तूने मुझे करने को दिया था उस को पूरा करके मैंने ज़मीन पर तेरा जलाल ज़ाहिर किया और अब ऐ बाप तू उस जलाल से जो मैं दुनिया के पेशतर तेरे साथ रखता था मुझे अपने साथ जलाली बना ले।” (यूहन्ना 17:15)

## मौलवी साहब की तफ़सीर कुरआन के मुखालिफ़

पस इन्जील जलील के मुतालए से साबित हो जाता है कि मर्हूम मौलवी साहब की तफ़सीर ग़लत है। अल्लाह तआला की शहादत, कलिमतुल्लाह (मसीह) की शहादत, हवारइन (शागिर्दों) की गवाही, इब्ने-अल्लाह (मसीह) की ज़िंदगी के आखिरी हफ़ते के वाक़ियात। आपकी सलीब और अज़ीयत का एक एक लम्हा और इन्जील जलील की एक एक आयत उनकी तफ़सीर का ग़लत साबित करती है। अगर मोअतरिज़ इनसे काइल नहीं हुए तो कम अज़ कम कुरआन व हदीस के तो आप काइल हैं। और ये दोनों इस्मत-ए-

मसीह (मसीह की पाकीज़गी) पर शाहिद हैं। (सूरह इमरान आयत 31 वगैरह, मशारिक-उल-अनवार सफ़ा 929) जिस हाल कि कलिमतुल्लाह (मसीह) बेगुनाह और मासूम थे तो खुदा आपको कैसे छोड़ सकता था? क्या खुदा बेगुनाह ईमानदार बंदों और अपने मासूम रसूलों को जांकनी (मौत के करीब) की हालत में तर्क कर दिया करता है। बिलखुसूस जब वो अपने पैगाम की वजह से मसाइब व अलाम में मुब्तला हों? मोअतरिज़ ने बाईस्वी (22) ज़बूर की आयत की तावील करते वक़्त कुरआन व हदीस का ही पास और लिहाज़ किया होता। क्या इस्लामी अक्काइद के मुताबिक़ खुदा उन रसूलों को जो रज़ा-ए-इलाही को पूरा करते हैं उनकी मौत के वक़्त मायूसी और ना उम्मीदी की हालत में छोड़कर उनको तर्क कर दिया करता है। कुरआन व हदीस के मुताबिक़ मसीह की शान ऐसी है कि मौत के वक़्त खुदा आपको मायूसी की हालत छोड़ देता? वो जो खुदा का मासूम नबी और कलिमा है और रूह-अल्लाह (अल्लाह की रूह) है और खुदा का रसूल और फ़रमांबदार बंदा है और जिस पर अल्लाह तआला ने एहसान किए क्या उस का अंजाम ऐसा हसरतनाक हो सकता है? कुरआन साफ़ तौर पर कहता है कि, **اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي** (सूरत आले-इमरान आयत 45) कि “ईसा दुनिया और आखिरत दोनों में रूदार और खुदा के मुकर्रिबों में से है।” क्या **وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ** की यही तफ़्सीर है कि मौत के वक़्त उस को खुदा की कुर्बत (नज़दिकी) और रिफ़ाक़त भी नसीब ना हो?

अगर मोअतरिज़ आँजहानी मिर्जाए क़ादियानी की पैरवी करके ये कहें कि हम हज़रत ईसा की निस्बत ये नहीं मानते लेकिन ईसाईयों की इन्जील येसू मसीह की निस्बत ये कहती है तो वो गोया दुनिया पर रोशन कर देते हैं कि वो एक ऐसी बात पेश करते हैं जिसको वो ना तो खुद मानते हैं और ना उनके मुखातिब मानते हैं और यह एक ऐसी शर्मनाक पोज़ीशन है जिसको कोई हक़-पसंद जायज़ नहीं रख सकता।

महूम मौलवी साहब पर वाजिब था कि अगर वो कलिमतुल्लाह (मसीह) के मुताल्लिक़ कुरआन की शहादत (गवाही) से कोई ऐसी बात मानते हैं जिसका ज़िक़ इन्जील में उनके ज़ोअम (गुरूर, गुमान) में इस के ख़िलाफ़ है और अगर इन्जील जलील के किसी क़ौल से कोई वस्वसा (अंदेशा) उन के दिल में पैदा हुआ था तो उनको उस की तावील इस तौर से करना चाहिए थी जो इस को कुरआन के मुताबिक़ कर दे। क्योंकि

कुरआन के मुताबिक इन्जील कलाम-ए-इलाही है जिसका वो खुद मुहाफिज़ और मुसद्दिक (सच्चा बताने वाला) है। (सूरह माइदा रूकूअ 6, आयात 48 ता 52 व 91 वगैरह) जिसके मफ़हूम को अहले-अरब पर ज़ाहिर करने की खातिर वो अरबी ज़बान में नाज़िल किया गया। (शोअरा आयत 197, अनआम रूकूअ 20 आयात 156 ता 158 वगैरह) यही वजह है कि कुरआन के मुताबिक सच्चा मुसलमान सिर्फ वही हो सकता है जो इन्जील पर भी ईमान रखे। (सूरह बकरह आयत 3 वगैरह) और चूँकि खुदा के कलाम में तज़ाद व तनाकिस (टकराव) नहीं होता। (सूरह निसा आयत 84) लिहाज़ा कुरआन व इन्जील की तावील का उसूल भी एक ही है। (सूरह यूनुस आयत 94) ये कुरआनी उसूल सही उसूल तफ़्सीर है जिसकी मुफ़स्सिल तश्रीह हम अपने रिसाले “तौज़ीह-उल-बयान फ़ी उसूल-उल-कुरआन” में कर चुके हैं। लेकिन मौलवी साहब ने सही तावील करने की बजाय ऐसी तावील की जो ना सिर्फ कुरआन के खिलाफ़ है बल्कि इन्जील जलील के एक एक लफ़्ज़ के खिलाफ़ है और कुरआन व इन्जील दोनों इस को मुत्तफ़िका तौर पर बातिल और मर्दूद करार देते हैं।

गर तू कुरआँ बरीं ग़लत ख़वानी  
बबरी रौनक-ए-मुसलमानी

अगर मोअतरज़ीन के ईमान ने इन को ग़लत तावील करना ही सिखलाया है तो कुरआन उनको मुखातिब करके कहता है, *قل بئسمايامر كه به ايمان كه وان كنته مومنين* “तू कह अगर तुम्हारा ईमान यही है और तुम ही ईमानदार हो तो तुम्हारा ईमान तुमको बुरा सिखाता है।”

**इस बाब में हमने ये साबित किया है :-**

(1) मौलवी सना-उल्लाह साहब ने दीदा व दानिस्ता (जानबूझ कर) वाक़ियात सहीहा का इख़फ़ा (पोशीदा करना) करके आम्मतुन्नास (लोगों) को ये मुग़ालता देना चाहा है कि आया ज़ेर-ए-बहस इब्ने-अल्लाह (मसीह) का अपना “मक़ूला” है। हालाँकि ये कलिमा आँखुदावंद का अपना “मक़ूला” नहीं है। बल्कि बाईस्वीं (22) ज़बूर की पहली आयत है जिसकी मुनज्जी कौनैन ने सलीब पर से तिलावत फ़रमाई। इस बहस के दौरान में

मौलवी साहब ने हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) की शान में इस कद्र सोअदबी का इर्तिकाब किया है कि अल-इमान :-

बिक रहा हूँ जिन्नों में क्या कुछ  
कुछ ना समझे खुदा करे कोई

(2) हमने इन्जील जलील से साबित किया है कि मौलवी सना-उल्लाह का इस्तिदलाल कि ये कलिमा ज़ाहिर करता है कि खुदा में और मसीह में जुदाई और दूरी थी और कि खुदा ने आपको मआज़-अल्लाह (खुदा एसी बातों से बचाए) छोड़ दिया था सरीहन ग़लत है। ये तावील तफ़सीर-बिल-राए की उम्दा मिसाल है जिसके खिलाफ़ मर्हूम खुद जिहाद करते रहे। ये तफ़सीर हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) के कलिमात, तय्यिबात, खयालात, जज़्बात और अफ़आल की ज़िद (खिलाफ) है और इन्जील जलील की आयात-ए-बय्यनात की ऐन नक़ीज़ (खिलाफ) है। मौलवी साहब ने आया ज़ेर-ए-बहस को इस तरह माएल कर दिया है और आपकी तावील ऐसे दर्जे पर पहुंच गई है कि इस (पर) तावील “का लफ़ज़” भी सादिक नहीं आ सकता। मौलवी साहब की तावील *القول بما لا يرضى به* के ग़लत अस्ल के मुताबिक़ है, लिहाज़ा मर्दूद है।

## बाब सोम

### आया ज़ेरे बहस का मफ़हूम

फ़स्ल अद्वल

### बाईसवां ज़बूर

बाईस्वीं (22) ज़बूर की शान-ए-नुज़ूल

ज़बूर की किताब एक मजमूआ है जो क़ौम यहूद के बेहतरीन शुअरा के मिल्ली और मज़हबी कलाम का इतिहास है। ये यहूदी शायर हज़रत दाऊद से लेकर मुख्तलिफ़ ज़मानों में पैदा हुए। उन्होंने अपने अपने वक़्त के कवाइफ़ व हालात को पेश-ए-नज़र रखकर इन मज़ामीर को मंजूम किया। बाअज़ मज़ामीर क़ौम यहूद की खुशहाली के ज़माने में लिखे गए और बाअज़ उस क़ौम के ज़वाल के ज़माने में मंजूम किए गए। बाईसवां (22) ज़बूर और चंद दीगर मज़ामीर (मसलन 26, 27, 28, 31, 35, 38, 39, 40, 41, 69, 71 वगैरह) की तरह क़ौम इस्राईल की पस्ती, ज़िल्लत, मुसीबत और ज़वाल के ज़माने में लिखा गया। इस ज़बूर के मुतालए से अयाँ है कि मज़मूर नवीस के इर्द-गिर्द के हालात इस क़द्र तारीक हैं कि क़ौम यहूद पड़ी सिसक (हिचकी, सुबकी) रही है। दम तोड़ रही है और फ़ना होने के करीब है। बुत-परस्त अक्वाम ने खुदा की अपनी क़ौम को जो अक्वाम आलम के लिए एक नूर थी। (यसअयाह 42:7) चारों तरफ़ नरगा में घेर रखा है। (आयत 6, 12, 21) मज़मूर नवीस के दिल में बीम वर्जा की कश्मकश है। और उस को ऐसा मालूम होता है कि खुदा ने अपनी बर्गुज़ीदा क़ौम को तर्क कर दिया है। (आयत 1) “सियून कहती है यहोवा ने मुझे तर्क किया है और खुदावंद मुझे भूल गया है।” (यसअयाह 49:14, ज़बूर 13:1, 88:14) बाअज़ मुफ़स्सिरीन का खयाल है कि (22 ज़बूर) हज़रत नहमियाह के ज़माने के हालात का आईना है। जब क़ौम इस्राईल निहायत मुसीबत और ज़िल्लत की हालत में गिरफ़्तार थी। (नहमियाह 1:3) वो इस ज़बूर की सातवीं आयत की (नहमियाह 4:2) के ज़रीये और छठी आयत की (नहमियाह 2:19) के ज़रीये ताबीर करते हैं। इन मुफ़स्सिरीन का खयाल है कि आयत 12 से मुराद अम्मोनी हैं। (सफ़नियाह 2:8 यर्मियाह 49 1) और तेरहवीं (13) आयत से मुराद क़बाइल अरब हैं और आयत (22, 16 व 17) से मुराद सिकम के रहने वाले हैं।

## इस ज़बूर का मतलब

बाईस्वीं (22) ज़बूर का मुतालआ ये ज़ाहिर करता है कि इस का मुसन्निफ़ शायर (जो खुद एक ईमानदार शख्स है) ना-मुवाफ़िक़ हालात की तारीकी में अपने ईमान के ज़रीये ये मालूम करना चाहता है कि एक क़ौम जो अक्वाम-ए-आलम में से खुदा की वाहिद परस्तार (इबादत-गुज़ार) है क्यों फ़ना हो रही है? पहली आयत में लफ़ज़ “क्यों” खुदा की परवरदिगारी पर शक नहीं करता बल्कि इस से मुराद ताज्जुब का सवाल और

हैरानगी का इज़हार है। वो पूछता है कि क्या वजह है कि खुदा की बर्गुज़ीदा क्रौम फ़ना हो रही है? मज़मूर नवीस मुतअज्जिब हो कर सवाल करता है कि खुदा ने क्रौम इस्राईल को क्यों तर्क कर दिया है? और इस क्रौम की पुकार उस के नजात देने वाले खुदा से क्यों दूर है? वो क्यों नहीं सुनता? क्रौम की हालत ऐसी है कि वहिश्ब व रोज़ बेकरारी की हालत में पड़ी कराहती है। (ज़बूर 22:1, 2) खुदा तू क्रौम इस्राईल का कुद्दूस खुदा है जो ज़माना-ए-माज़ी में उस के दुश्मनों के हाथों से रिहाई देता रहा है। (ज़बूर 22:4) और जिस का वाअदा है कि वो अय्याम मुस्तक़बिल में भी अपनी क्रौम को छुड़ाएगा। (इस्तिस्ना 30:3 ता 4 वगैरह) क्रौम इस्राईल की ज़बूनी का अब ये हाल हो गया है कि वो एक कीड़े की मानिंद हो गई है। (ज़बूर 22:6, यसअयाह 41:14) जिसको बुत-परस्त अक्वाम हकीर जान कर अंगुशत-नुमाई करती हैं। (ज़बूर 22:6, 7, यसअयाह 49:7, 53:13) ये बुत-परस्त अक्वाम अज़रूए तमस्सखर इस्राईल का ठट्ठा करके कहती हैं कि इस क्रौम ने खुदा पर तवक्कुल किया था। अब इस को छुड़ाने वाला खुदा आए। और अपनी बर्गुज़ीदा क्रौम को हमारे हाथों से छुड़ाले। (ज़बूर 22:8, यसअयाह 41:14, 43:14, 44:6, 24, 47:4, 48:7, 49:7, 26, 54:5, 8) क्रौम पर हलाकत आ पड़ी है। (ज़बूर 22:11) और बुत-परस्त अक्वाम जंगी दरिंदों, कुत्तों और सांडों की तरह इस पर पै दरपे हमले कर रही हैं। (ज़बूर 22:12 ता 19) क्रौम की ज़िंदगी मारिज़-ए-खतर में है और उस के दुश्मन शादयाने बजा रहे हैं। ऐसे नाज़ुक अय्याम में इस्राईल की क्रौम अपने खुदा से फ़र्याद करके कहती है कि ऐ खुदा अपनी बर्गुज़ीदा क्रौम इस्राईल को बुत-परस्त अक्वाम के हलाकत आफ़रीन हाथों से बचा। (ज़बूर 22:19, 20) फिर मज़मूर नवीस शायर कहता है कि बिल-आख़िर खुदा ने इस तंगी की हालत में क्रौम इस्राईल की गिर्ये वज़ारी की आवाज़ और दुआ सुन कर इस को रिहाई बख़्शी। (ज़बूर 22:21, 24) पस क्रौम इस नजात को कभी फ़रामोश ना करेगी। बल्कि खुदा की सना-ख्वाँ हो कर उस की सताइश और मदह-सराई (हम्द) करेगी। (ज़बूर 22:22 ता 26) और शुक्रगुज़ार हो कर बुत-परस्त अक्वाम को खुदा के इल्म और उस की नजात की बशारत देगी। ताकि कुल अक्वाम आलम ये जान लें कि सलतनत खुदावंद की है और वही अक्वाम आलम का वाहिद खुदा है। (ज़बूर 22:27 ता आख़िर)

पस ये ज़बूर एक क्रौम की चीख व पुकार की आवाज़ है जो वो अपनी मिल्ली ज़िंदगी और क्रौमी हस्ती की माअरज़-ए-खतर में पड़ा देखकर खुदा के हुज़ूर करती है। लेकिन गौरतलब बात ये है कि ऐसे आड़े वक़्त में भी जब क्रौम हलाक और फ़ना होती

नज़र आती है मज़मूर नवीस का ईमान मुतज़लज़ल नहीं होता। और गो हालात बज़ाहिर ऐसे यास-अंगेज़ (मायूसी से भरे) हैं कि ना उम्मीदी की तारीक घटाएँ हर तरफ़ से इस क़ौम को घेरे हुए हैं।

ऐसा मालूम होता है कि ख़ुदा ने इस क़ौम को छोड़ दिया है। ताहम मज़मूर नवीस के ईमान का नूर घटा टोप अंधेरे में भी चमकता है जिसकी ज़िया पाशियों से यास (मायूसी) की पुकार नजात और रिहाई के नारों में तब्दील हो जाती है।

सुतूर बाला में हवालेजात दीए गए हैं उनमें नाज़रीन ने मुलाहिज़ा किया होगा, कि 22 वां ज़बूर और हज़रत यसअयाह नबी के सहीफे के दूसरे हिस्से (अबवाब 40 ता आख़िर) में मुशाबहत और मुताबिक़त पाई जाती है। खादिम-ए-यहोवा एक कीड़ा है (यसअयाह 41:14) और क़ौम इस्राईल एक ऐसी जमाअत है, जिसको लोग हकीर समझ कर (यसअयाह 49:7, 53:3) उस से किनारा-कश होते हैं गोया कि वो जिन्स इन्सानी में शुमार होने के काबिल ही नहीं। (यसअयाह 52:14, 53:2, 13, 51:7) लेकिन उस की उम्मीद गाह उस का रिहाई देने वाला ख़ुदा इस्राईल का कुद्दूस और वाहिद ख़ुदा है जिसकी वो वाहिद परस्तार है। (यसअयाह 41:14, 43:14, 44:6, 14, 24:64, 47:4, 7:4, 48:17, 49:7, 26, 54:5, 8) इस मुख़्तसर मुकाबले से ज़ाहिर है कि (22) वीं ज़बूर का ताल्लुक़ सहीफ़ा मज़कूर के उस हिस्से से (जिसमें खादिम यहोवा का बारहा ज़िक़्र आता है) किस क़द्र गहिरा है।

## सीगा वाहिद का इस्तिमाल

मज़कूर बाला तफ़सीर से ज़ाहिर है कि बाईस्वीं (22) ज़बूर में सीगा वाहिद मुतकल्लिम और वाहिद गायब क़ौम बनी-इस्राईल के लिए इस्तिमाल किया गया है और तमाम ज़बूर में इस सीगे का इतलाक़ किसी ख़ास फ़र्द पर नहीं है। जो हज़रात अहले-यहूद की कुतुब समावी की ज़बान और मुहावरात से नावाक़िफ़ हैं वो मज़ाला में पड़ कर खयाल करते हैं कि सीगा वाहिद किसी ख़ास फ़र्द के लिए इस्तिमाल हुआ है। लेकिन अम्बिया-ए-अहद-ए-अतीक़ की सहफ़-ए-मुक़द्दसा का मुतालआ ज़ाहिर कर देता है कि वाहिद का सीगा ना सिर्फ़ अफ़राद के लिए इस्तिमाल हुआ है बल्कि क़ौमों, गिरोहों और जमाअतों के लिए भी आम तौर पर कसीर-उल-तादाद मुक़ामात में मुस्तअमल हुआ है।

तौरात शरीफ़ और सहाइफ़ अम्बिया के बेशुमार मुकामात में क़ौम बनी-इस्राईल के लिए सीगा वाहिद हाज़िर वारिद हुआ है। मिसाल के तौर पर मुश्ते नमूना अज़खरवारे (मुट्ठी भर नमूने के तौर पर) मुलाहिज़ा हो (खुरूज 4:22, इस्तिस्ना 6:4, 9:1, 23:29, यसअयाह 4:27, 41:8, 43:1 ता 7, 43:22, 44:21 ता 22, यर्मियाह 2:2, 46:27, हिज़क्रीएल 13:4, होसेअ 4:15, 9:1, आमोस 4:12, 6:6, 7:15 ता 17, सफनियाह 3:14 ता 15, वगैरह-वगैरह) ज़बूर की किताब में (80) मज़ामीर यानी आधे से ज़्यादा मज़ामीर ऐसे हैं जिनमें मज़मूर नवीस शूअरा वाहिद मुतकल्लिम का सीगा इस्तिमाल करते हैं। इन ज़बूरों में बेशुमार मुकामात में ऐसे मिसरे और अशआर हैं जिनमें मज़मूर नवीस शूअरा वाहिद हाज़िर और वाहिद मुतकल्लिम के सीगे क़ौम बनी-इस्राईल के लिए इस्तिमाल करते हैं। चुनान्चे (ज़बूर 129) इस की एक बय्यन मिसाल है। किताब यर्मियाह का नोहा में क़ौम इस्राईल सीगा वाहिद मुतकल्लिम में कलाम करती है।

कुतुब अहदे-अतीक में वाहिद का सीगा ना सिर्फ़ क़ौम बनी-इस्राईल के लिए वारिद हुआ है बल्कि दीगर अक्वाम के लिए भी आया है। (यशूअ 9:7, गिनती 2:12 ता 21, 21:22, इस्तिस्ना 2:27 ता 29, कज़ा 11:19 वगैरह) बाज़ औकात किसी शहर की आबादी का ज़िक्र मन हैस-उल-क़ौम सीगा वाहिद में आया है। (1 सामुएल 5:10) बाअज़ मुकामात में सीगा वाहिद बनी-इस्राईल के खास क़बाइल के लिए इस्तिमाल हुआ है। (यशूअ 17 बाब आयात 14 ताआखिर, कज़ा 1:3, ज़करीया 8:21 वगैरह) यसअयाह नबी के सहीफ़े के दूसरे हिस्से में बिलखुसूस जहां “खादिम यहोवा” का ज़िक्र आता है कि और सीगा वाहिद इस्तिमाल किया गया है उन मुकामात में सीगा वाहिद किसी फ़र्द-ए-वाहिद के लिए वारिद नहीं हुआ बल्कि इस से क़ौम बनी-इस्राईल की बर्गुज़ीदा जमाअत मुराद है। मसलन (यसअयाह 42:1 ता 4, 49:1 ता 6, 50:4 ता 9, 52:13, 53:13) में सीगा वाहिद से मुराद क़ौम इस्राईल की खास जमाअत है। चुनान्चे इसी सीगा के 49 बाब की पहली छः (6) आयात में वाज़ेह अल्फ़ाज़ में ज़िक्र किया गया है कि सीगा वाहिद से मर्द कोई खास फ़र्द नहीं। बल्कि इस्राईल की बर्गुज़ीदा जमाअत मुराद है। अम्साल की किताब के आठवें (8) बाब में शायर ने हिक्मत और खिर्द और दानिश को शख्स-ए-वाहिद करार दिया है।

पस तौरात, ज़बूर और सहाइफ़ अम्बिया की ज़बान और मुहावरात से ज़ाहिर है कि (22) ज़बूर में वाहिद का सीगा क़ौम इस्राईल के लिए इस्तिमाल किया गया है।

मुस्तनद यहूदी मुफ़स्सिरीन बाईस्वीं (22) ज़बूर की इसी तरह तफ़सीर करके कहते हैं कि इस ज़बूर में सीगा मुतकल्लिम से मुराद क्रौम बनी-इसाईल है जो मसाइब व अलाम (दुःख तकलीफ) में मुब्तला हो कर खुदा को पुकारती है और उस का रिहाई देने वाला खुदा उस की गिर्ये वज़ारी को सुनकर उस की मदद करता है और क्रौम की पस्ती और ज़बूनी से नजात बख़्शता है।

## एली, एली, लमा शबक़तनी का मफ़हूम

पस इस मज़मूर शरीफ़ की पहली आयत, “ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया” से मुराद ये है, “ऐ क्रौम इसाईल के खुदा, ऐ क्रौम इसाईल के खुदा तूने बनी-इसाईल को क्यों छोड़ दिया?” तू अपनी बर्गुज़ीदा क्रौम की फ़र्याद की आवाज़ से और उस की आह फुगां से क्यों दूर रहा?”

नाज़रीन ने मर्हूम अल्लामा इक़बाल का शिकवा ज़रूर पढ़ा होगा। आप बस ये समझ लीजिए कि आया ज़ेर-ए-बहस में बनी-इसाईल का शायर क्रौम बनी-इसाईल की तरफ़ से बईना इसी तरह शिकवा करता है जिस तरह अल्लामा मर्हूम ने मुसलमानान आलम की तरफ़ से बारगाह-ए-खुदावंदी में शिकवा किया था। ये मज़मूर नवीस शायर देखता है कि बनी-इसाईल की मिल्ली ज़िंदगी मारिज़-ए-खतर में है और वो सवाल करता है कि एक क्रौम जो खुदा-ए-वाहिद की परस्तार है क्यों फ़ना हो रही है? वाजिब तो ये था कि बुत-परस्त अक्वाम पस्त और ज़बून हाल होतीं। ज़वाल और पस्ती एक ऐसी क्रौम की जज़ा नहीं होनी चाहिए जो कुल अक्वाम आलम में से खुदा की वाहिद परस्तिश करने वाली है। हम मर्हूम डाक्टर इक़बाल की नज़्म शिकवा के बाअज़ अशआर नक़ल करते हैं और नाज़रीन से दरख्वास्त करते हैं कि उनका 22 वीं ज़बूर के यहूदी शिकवा के अशआर के साथ मुकाबला करें और देखें कि दोनों में किस कद्र मुवाफ़िकत व मुनासबत है :-

जुर्आत आमोज़ मरी ताब-ए-सुखन है मुझको  
ऐ खुदा शकोह-ए-अरबाब-ए-वफ़ा भी सुन ले  
फिर ये आजुर्दगी-ए-ग़ैर सबब क्या मअनी?  
हमसे पहले था अजब तेरे जहां का मुंतज़िर

शिकवा अल्लाह से ख़ाकम-ब-दहन है मुझको  
खूगर-ए-हम्द से थोड़ा सा गिला भी सुन ले  
अपने शैदाओं पे ये चश्म-ए-ग़ज़ब क्या मअनी  
कहीं मस्जूद थे पत्थर, कहीं माबूद शजर

खूगर पैकर महसूस थी इन्सान की नज़र  
 तुझको मालूम है लेता ना था कोई नाम तेरा  
 नक्श-ए-तौहीद का हर दिल पे बिठाया हमने  
 अब वो अलताफ़ नहीं हम पे इनायत नहीं  
 खंदाज़न कुफ़्र है एहसास तुझे है कि नहीं  
 तअन-ए-अग़यार है, रुस्वाई व नादारी है  
 जो-ए-खूँ मे चकदाज़ हसरत देरीना मा

मानता फिर कोई अन-देखे खुदा को क्योंकर?  
 कुव्वत बाजूए मुस्लिम ने किया काम तेरा  
 ज़ेर-ए-खंजर भी ये पैग़ाम सुनाया हमने  
 बात क्या है पहली इसी मुदारात नहीं?  
 अपनी तौहीद का कुछ पास तुझे है कि नहीं?  
 क्या तेरे नाम पे मरने का एवज़ ख़ारी है?  
 मे तपद नाला ब-नशतर कदा सीना मा

मुन्दरिजा बाला अशआर में से पहले तीन का मुकाबला (22) ज़बूर की पहली दो आयात से करें और मुलाहिज़ा फ़रमाएं कि अशआर नम्बर 4, 5 की रोशनी में तीसरी आयात का मतलब किस तरह वाज़ेह हो जाता है। इतना फ़र्क़ ज़रूर है कि अल्लामा मर्हूम ने शाएराना मुबालगा से काम लिया है लेकिन मज़मूर नवीस एक सच्ची और वाज़ेह हकीकत को बयान करता है क्योंकि ये अम्र एक तारीखी वाक़िया है उस के ज़माने में सिर्फ़ क़ौम बनी-इस्राईल ही दुनिया-भर में एक ऐसी क़ौम थी जो खुदा की वाहिद परस्तार थी और दुनिया की बाक़ी कुल उम्मम बुत-परस्ती में मुब्तला थीं। शेअर नम्बर 6 आयात नम्बर 4, 5, 6 को वाज़ेह करता है और शेअर नम्बर 7, 8 की मदद से हम आयात 6 ता 13 को बखूबी समझ सकते हैं और आखिरी शेअर आयात 14, 15 का समां हमारी आँखों के सामने बांध देता है।

पस (22) ज़बूर एक शिकवा और शिकायत है जो किसी ज़बरदस्त ईमानदार यहूदी शायर ने लिखा है। इस शायर के दिल में क़ौम का दर्द है। इस के सीने में मिल्ली ग़ैरत की आग़ भड़क रही है। ये शिकवा उसी किस्म का है जिस किस्म का हज़रत यसअयाह नबी ने किया था। (बाब 63) आयात 15 ता आखिर बाब 64) जिसका जवाब भी खुदा ने इस नबी को दे दिया था। (यसअयाह 49:13 ता 15) इसी किस्म का शिकवा हज़रत यर्मियाह ने किया था, “ऐ खुदावंद मैं तेरे साथ हुज्जत करूँगा। शरीर अपनी रविश में क्यों कामयाब होते हैं? उन्होंने जड़ पकड़ ली वो बढ़ गए बल्कि बरूमंद हुए। ऐ इस्राईल की उम्मीद और मुसीबत के वक़्त में उस के बचाने वाले तू मुल्क में परदेसी की मानिंद बना और उस मुसाफ़िर की तरह जो रात काटने के लिए डेरा डाले। ऐ खुदावंद तू हमारे

दर्मियान है तू हमको तर्क ना करा।” (यर्मियाह बाब 12, 14) ये शिकवा इसी किस्म का है जिस किस्म का हज़रत हबक्कूक ने किया, “ऐ खुदावंद में कब तक नाला करूंगा और तू ना सुनेगा? मैं तेरे हुज़ूर कब तक चिल्लाऊंगा, जुल्म जुल्म और तू ना बचाएगा?... तेरी आँखें तो ऐसी पाक हैं कि तू बदी को नहीं देख सकता। फिर तू दगाबाजों पर क्यों नज़र करता है और जब शरीर सादिक को निगल जाता है तब तू क्यों खामोश रहता है?” (हबक्कूक पहला बाब) ये इसी किस्म का “शिकवा” है जिस किस्म का मुहम्मद अरबी ने किया था। कुरआन ऐसे ही अम्बिया-अल्लाह की तरफ़ इशारा करके कहता है कि (सूरह यूसुफ़ रूकूअ 12) “पहले लोग भी पैगम्बरों को झुठलाते रहे यहां तक कि जब रसूल ना उम्मीद हो गए और उन को ये गुमान हुआ कि उनके साथ खुदा ने झूटे वाअदे किए हैं तो उनके पास हमारी मदद आ पहुंची...इस में शक नहीं कि इन किस्सों में अक्लमंदों के लिए इब्रत है। ये कुछ बनावटी बात नहीं है लेकिन उस कलाम (कुतुब-ए-आस्मानी) की तस्दीक करती है जो इस के पहले है। इस में इन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं हर चीज़ की, तफ़सील, हिदायत और रहमत है।” (आयात 110, 111) उम्मीद है कि अब मोअतरिज़ इस नुक्ते को इन आयात की मदद से समझ सकेगा। कुरआनी सूरत सूरह नूह हज़रत नूह के शिकवे से भरी है जो वो दरगाह-ए-इलाही में करता है।

बाईस्वीं (22) ज़बूर का शिकवा इसी किस्म का शिकवा है जिस किस्म का मुहम्मद अरबी ने किया था। जब कुरैश कुरआन को झटलाते और कहते थे कि “कुरआन एक झूट बात है जो मुहम्मद ने घड़ी है।” (फुर्कान आयत 5, 6) “और वो परेशान ख्वाबों का मजमूआ है।” (अम्बिया आयत 5) और “पहले लोगों की कहानियां हैं।” तब आपने दरगाह-ए-इलाही में शिकायत की कि “या अल्लाह मेरी क़ौम ने कुरआन को ठहराया झुक-झुका।” (फुर्कान आयत 22) फिर जब हज़रत मुहम्मद ने बाशिंदगान-ए-ताइफ़ को दावत-ए-इस्लाम दी और वहां के गुंडों ने आप पर पत्थर बरसाए जिनके हाथों से एक ईसाई ने आपको बचाया तो आपने शिकवा करके कहा, “ऐ अल्लाह मैं तेरे हुज़ूर अपनी ज़अफ़-ए-कुव्वत और लाचारी की निस्बत अर्ज़ करता हूँ। ऐ अरहम-उल-राहमीन तूही बे चारों का चारा और मेरा कारसाज़ है। मुझको तू किस के सपुर्द करता है? क्या तुर्श रवाजनबियों के और दुश्मनों के?” जंग बद्र के रोज़ आप पर सख्त ख़ुजू (आजिज़ी, गिड़गिड़ाना) की हालत तारी थी और आप अल्लाह से कहते थे। या अल्लाह अगर काफ़िर फ़त्हमंद हो गए तो कुफ़्र फैल जाएगा। अगर मुसलमानों की ये क़लील जमाअत हलाक हो गई तो फिर कौन तेरी परस्तिश करेगा? ऐ अल्लाह मैं तेरी रहमत से फ़र्याद चाहता हूँ।”

बईना इसी तरह बाईसवां (22) ज़बूर एक शिकवा है जो एक पुर-दर्द दिल से निकलता है। मज़मूर नवीस अपनी क्रौम इस्राईल की ज़िंदगी को चारों तरफ़ से बुत-परस्त अक्वाम के हलाकत आफ़रीन हाथों में पड़ा देखकर खुदा से शिकवा करता है कि “ऐ क्रौम बनी-इस्राईल के खुदा, तूने अपनी क्रौम बनी-इस्राईल को क्यों छोड़ दिया है? उस के नाला और फ़र्याद से तू क्यों दूर रहता है? “ऐ इस्राईल के खुदा तेरी क्रौम शब व रोज़ तेरे हुज़ूर गिर्ये वज़ारी करती है तू उस की मदद क्यों नहीं करता? तू इस क्रौम का वाहिद खुदा-ए-कुद्दूस है और इस क्रौम की हम्दो सना तेरा तख़्त है। जिस पर तू तख़्त नशीन है। अगर ये हम्द व सना की आवाज़ ख़ामोश हो गई तो तू किस तख़्त पर बैठेगा और तेरी परस्तिश कौन करेगा? ऐ इस्राईल की क्रौम के चारासाज़ अपनी क्रौम की मदद के लिए जल्दी कर।” (ज़बूर 22 1, 3, 19)

पस ये आयत “शिकवा अरबाब-ए-वफ़ा” (شکوہ اربابِ وفا) है। ये राज़ो नयाज़ की बातें हैं। जो मुहिब सादिक़ और महबूब के दर्मियान और कैद दस्तूर से बाला होती हैं। ये आशिक़ का गिला है जो वो माशूक़ से करता है। क्योंकि आशिक़ सादिक़ और माशूके हकीकी में इश्क़ व मुहब्बत का रिश्ता है इन राज़ व नयाज़ की बातों को मोअतरिज़ की सी ज़हनीयत रखने वाला क्या जानें जिनकी उल्टी समझ इस इश्क़ व मुहब्बत के रिश्ते को जुदाई और इन्फ़ाक़ से ताबीर करती है? इन बेचारों को क्या मालूम कि ये जुदाई मंतकीयाना इन्फ़िकाक़ की जुदाई नहीं बल्कि ने की जुदाई है। जिसकी निस्बत मोलानाए रुम फ़र्माते हैं :-

بشنواز نے چوں حکایت میکند

وزجدائی ہاشکایت میکند

हज़रत मौलाना मर्हूम सच्च फ़र्माते हैं कि :-

محرّم این ہوش بڑے ہوش نیست

مرزباں را مشتری چوں گوش نیست

आशिक़ के गले की आवाज़ माशूके हकीकी के कानों तक पहुंच जाती है।

बअल्फ़ाज़ मर्हूम इक़बाल :-

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है  
 पर नहीं ताक़त-ए-परवाज़ मगर रखती है  
 कुदसी-उल-अस्ल है रिफ़अत पे नज़र रखती है  
 खाक से उठती है गर्दों पे गुज़र रखती है  
 उड़के आवाज़ मरी ताबफ़लक जा पहुंची  
 यानी इस गुल की महक अर्श तलक जा पहुंची

जब आशिक़ की ये फ़र्याद अर्श मुअल्ला तक जा पहुंची तो अल्लाह की रहमत ने अपनी क़ौम इस्राईल की “सुन ली” और उस को रिहाई बख़शी। जिसकी वजह से इस्राईल की क़ौम उस की मदाह ख़वाँ हो कर ये मुसम्मम (मज्बूत) इरादा कर लेती है कि वो अक्वाम आलम को अपने माबूद हकीकी की बशारत देकर रहेगी। (ज़बूर 22:21 ता 31) पस ज़बूर का दूसरा हिस्सा माशूके हकीकी की हम्दो सताइश पर मुश्तमिल है।

हम मोअतरज़ीन को तफ़सीर का वही सबक़ याद दिलाते हैं जो मर्हूम मौलवी साहब ने मिर्ज़ाईयों, नेचरी मुसलमानों वग़ैरह को पढ़ाया था। आपने उनको ये सबक़ दिया था “कुरआन मजीद अरबी ज़बान में आया है इसलिए उस के सही माअने और सही तफ़सीर वही होगी जो अरबी ज़बान में आया है इसलिए उस के सही मअनी और सही तफ़सीर वही होगी जो अरबी ज़बान (सर्फ़ व नहो, लुगत वग़ैरह) के मुवाफ़िक़ हो। ये कुरआन मजीद की ख़ुसूसीयत नहीं। हर ज़बान का सही तर्जुमा और सही मतलब वही होता है जो उस ज़बान के सही मुहावरात के मुताबिक़ हो। इस उसूल में अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी वग़ैरह सब मुसावी (बराबर) हैं। इस के ख़िलाफ़ का नाम है तफ़सीर बिल-राए यानी जिस तफ़सीर में महज़ अटकल पचचो बातें की जाएं। ऐसी तफ़सीर ग़लत और बिल-राए कहलाती है।” (तफ़सीर बिल-राए सफ़ा 2) तफ़सीर बिल-राए ना सिर्फ़ ग़ैर-सही बल्कि हराम है। (सफ़ा 5) नाज़रीन से दरख़वास्त है कि वो मर्हूम मौलवी साहब का ये फ़त्वा याद रखें।

नाज़रीन ने देख लिया होगा कि हमारी तफ़सीर की बुनियाद अहद-ए-अतीक़ और अम्बिया-ए-साबक़ीन की ज़बान और मुहावरात पर कायम है लिहाज़ा वो सही है। लेकिन

मर्हूम मौलवी साहब की तफ़सीर महज़ तफ़सीर बिल-राए है। पस वो अटकल पच्यो बातें करते हैं। लिहाज़ा उनके अपने फ़तवे के मुताबिक़ मर्हूम की तफ़सीर ना सिर्फ़ सही बल्कि हराम है।

## फ़स्ल दोम

### आया ज़ेरे बहस और इब्ने-अल्लाह

#### सय्यदना मसीह ने इस आयत की तिलावत क्यों की?

सुतूर बाला में हम ज़िक्र कर चुके हैं कि (22) ज़बूर में एक ऐसे शख्स का शिकवा है जो ये खयाल करता है कि हमारे आमाल की सज़ा और जज़ा हमको इसी दुनिया में मिलती है। पस वो मुतअज्जिब हो कर ये पूछता है कि एक क़ौम जो रास्तबाज़ और खुदा-ए-वाहिद की अकेली परस्तिश करने वाली है क्यों पस्ती और ज़िल्लत की हालत में मुब्तला है और बुत-परस्त अक्वाम क्यों खुशहाल हैं। हालाँकि पस्ती और ज़बूनी (कमज़ोरी) बुत-परस्ती की सज़ा होनी चाहिए और उरूज और इक़बाल खुदा-परस्ती की जज़ा होनी चाहिए।

ये ज़ाहिर है कि हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) इस किस्म के एतिक़ादात के क़ाइल नहीं थे हमारे नेक व बद आमाल की जज़ा और सज़ा हम को फ़क़त इसी दुनिया में मिल जाती है। (यूहन्ना 9:3 वग़ैरह) पस जैसा हम ऊपर साबित भी कर चुके हैं। (22) ज़बूर आपके अपने रुहानी तजुर्बे और ज़ाती रुहानी हालत का इज़हार नहीं करता पस सवाल ये पैदा होता है कि आँखुदावंद ने सलीब पर से आया (आयत) ज़ेरे बहस की तिलावत क्यों फ़रमाई?

मौलवी सना-उल्लाह साहब भी अपने अख़बार अहले-हदीस में यही सवाल पूछते हैं और फ़र्माते हैं :-

“सवाल ये है कि मसीह ने सलीब पर जान देते हुए इसे क्यों पढ़ा? क़ायदा ये है कि कोई कलाम-ए-साबिक़ उस वक़्त पढ़ा

जाता है जब कोई शख्स अपनी हालत को उस के मुताबिक समझे। जब तक किसी वाकिये को गुजस्ता वाकिया के मुतासिल ना करार दिया जाये पहले वाकिये पर बोला हुआ कलाम दूसरे वाकिये में नकल नहीं हो सकता। हज़रत मसीह का तकलीफ़ के वक़्त ज़ेर-ए-बहस इंजीली फ़ि़क़ह अपने हाल पर चस्पाँ किए बग़ैर पढ़ना बिल्कुल ग़ैर मौजूं होगा।”

(अहले-हदीस 5 जून 1942 ई.)

जवाबन अर्ज़ है कि :-

हम अपने रिसाले “इस्राईल का नबी या जहान का मुनज्जी?” में ये साबित कर चुके हैं कि अहले यहूद की सुहफे मुक़द्दसा के मुतालआ से हम पर अयाँ हो जाता है कि खुदा ने क़ौम इस्राईल को इस गर्ज़ से चुन लिया था कि वो अक्वाम-ए-आलम में खुदा के इल्म और नजात की तब्लीग़ करे।

किस्मत क्या हर एक को क़स्साम-ए-अज़ल ने  
जो शख्स कि जिस चीज़ के काबिल नज़र आया

पस खुदा ने क़ौम-ए-यहूद में इस उसूल के तहत खासतौर पर अपना इल्म वदीअत कर रखा था और इस के सपुर्द ये ख़िदमत की थी कि वो दुनिया की तमाम क़ौमों को खुदा की मार्फ़त बख़शने और नजात का पैग़ाम देने का वसीला हो। ताकि तमाम दुनिया की जुम्ला अक्वाम अहले यहूद के ज़रीये एक हकीकी वाहिद खुदा के नूर से मुनव्वर हो जाएं (यसअयाह 42:6 वग़ैरह) क़ौम इस्राईल के इस नस्ब-उल-ऐन (मक़सद) की वजह से मुनज्जी आलमीन (मसीह) ने अपने काम और पैग़ाम को एक हद तक अहले यहूद में ही महदूद रखा। आँखुदावंद की हमेशा यही कोशिश रही कि इस खुफ़ता (सोई हुई) क़ौम को बेदार करें ताकि उस को अपनी मिल्ली हयात के असली नस्ब-उल-ऐन (मक़सद) का एहसास हो जाये और वो आपकी इन्ज़ील पर ईमान ला कर दीगर अक्वामे आलम को आपकी नजात की खुश-ख़बरी देने का वसीला बने। अनाजील अरबा के मुतालआ से ज़ाहिर है कि शुरू शुरू में आँखुदावंद को बड़ी उम्मीद थी कि क़ौम इस्राईल आप पर ईमान ले आएगी। (लूका 10 बाब, यूहन्ना 6:1, 5 वग़ैरह) लेकिन तलख़

तजुर्बे ने आपकी तमाम उम्मीदों पर पानी फेर दिया। (मर्कुस 2:20, 8:27 ता 28, 9:30, 32, 10:32 ता 34, मत्ती 23:29 ता 36 वगैरह) आप महसूस करते थे कि बनी-इस्राईल आपके हकीकी शागिर्द हो सकते हैं। (यूहन्ना 8:31 ता 32) और खुद सच्चाई से वाकिफ़ हो कर और नजात हासिल करके अक्वाम आलम की नजात का बाइस बन सकते हैं। (यूहन्ना 4:22) लेकिन इस नजात से फ़ैज़याब होने के बजाय अहले-यहूद की बे एतिक़ादी और बेईमानगी रोज़ बरोज़ तरक्की करती गई। (यूहन्ना 8:27, 46, 10:25, 26 वगैरह) और चूँकि खुदा की मुहब्बत उनमें नहीं थी। (यूहन्ना 5:42) वो खुदा के फ़र्ज़न्द होने के बजाय शैतान के फ़र्ज़न्द हो गए। (यूहन्ना 8:42) मुनज्जी आलमीन (मसीह) की क्रौम ने आपको रद्द कर दिया। (मत्ती 21:33, 45, 22:5 ता 8, मर्कुस 12:1 ता 10, लूका 14:16, 24, 20:9, 17 यूहन्ना 1:11, 8:19, 18:45 ता 47 वगैरह) और वो आँखुदावंद को क़त्ल करने के दरपे हो गए। (यूहन्ना 5:16 ता 18, 8:37, 11:47 ता 53)

कलिमतुल्लाह (मसीह) के दिल में अपनी क्रौम के लिए तड़प थी। क्योंकि आपकी मुहब्बत अहले-यहूद के लिए गैर-फ़ानी थी। (मत्ती 23:37, लूका 13:34) आप के दिल में इस गर्दनकश क्रौम के लिए जो खुदा से बागी थे एक दर्द था जो आपको चेन लेने नहीं देता था। आप इस क्रौम की बेईमानी पर बार-बार नौहा-ख़वाँ हुए। (मत्ती 17:17, 8:12, 1:15, 12:41, 43 लूका 11 बाब वगैरह) आप की निगाह हमेशा बनी-इस्राईल के उन गुमराह लोगों पर थी जो आपके खयाल में “उन भेड़ों की मानिंद जिनका कोई चरवाहा ना हो खस्ता-हाल और परागंदा थे।” (मत्ती 9:36) बिलखुसूस अपनी ज़िंदगी के आखिर में यहूदी क्रौम का खयाल आपको हर वक़्त सताता था। (मत्ती 20:32, 21:12 ता 14, 21:28 ता 32, 21:33, 46, 22:1-12, 23:13, 36, 23:37 ता 39 और 24 बाब वगैरह) ज़रा खयाल करो कि रुए-ज़मीन की तारीख में ज़ेल के हसरतनाक अल्फ़ाज़ अपना सानी कहीं रखते हैं? मुनज्जी आलमीन (मसीह) यहूदी क्रौम को मुखातिब करके फ़र्माते हैं, “ऐ<sup>7</sup> यरूशलेम, ऐ यरूशलेम, तू जो नबियों को क़त्ल करता और जो तेरे पास भेजे गए उन को संगसार करता है। कितनी बार मैंने चाहा कि जिस तरह मुर्गी अपने बच्चों को परों तले जमा कर लेती है उसी तरह मैं भी तेरे लड़कों को जमा करलूँ। मगर तुमने ना चाहा। देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिए वीरान छोड़ा जाता है। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि अब

---

<sup>7</sup> नाज़रीन नोट करें कि इन आयात में भी क्रौम यहूद के लिए सीगा वाहिद इस्तिमाल किया गया है। (बरकत-उल्लाह)

से मुझे फिर हरगिज़ ना देखोगे जब तक ना कहोगे कि मुबारक है वो जो खुदावंद के नाम से आता है।” (मती 23:37 ता 39) “जब वो (मसीह) हैकल (बैत-उल्लाह) से बाहर जा रहा था तो उस के शागिर्दों में से एक ने उस से कहा, ऐ उस्ताद, देख ये कैसे कैसे पत्थर और कैसी कैसी इमारतें हैं। येसू ने उस से कहा, तू इन बड़ी-बड़ी इमारतों को देखता है? यहां किसी पत्थर पर पत्थर बाकी ना रहेगा, जो गिराया ना जाये।” (मर्कुस 13:1 ता 2) “जब उस (येसू) ने नज़दीक आकर शहर को देखा तो उस पर रोया और कहा काश कि तू अपने<sup>8</sup> उसी दिन में सलामती की बातें जानता। मगर अब वो तेरी आँखों से छिप गई हैं। क्योंकि वो दिन तुझ पर आएँगे कि तेरे दुश्मन तेरे गर्द मोरचा बांध कर तुझे घेर लेंगे और हर तरफ से तंग करेंगे और तुझ में किसी पत्थर पर पत्थर ना छोड़ेंगे इसलिए कि तूने उस वक़्त को ना पहचाना जब तुझ पर निगाह की गई।” (लूका 19:41 ता 44)

खंजर चले किसी पर तड़पते हैं हम अमीर

सारे जहां का दर्द हमारे जिगर में है

मुनज्जी आलमीन (मसीह) अपनी ज़िंदगी के आखिरी हफ़्ते में अहले-यहूद की बर्गशतगी पर बार-बार इज़हार-ए-तास्सुफ़ करते। (मती 23 बाब) और क्रौम इस्राईल की किस्मत पर रोते थे। इस आखिरी हफ़्ते के शुरू में जब आप यरूशलेम तशरीफ़ ले गए तो आपने हैकल को देखा जो यहूद की इबादत-गाह होनी चाहिए थी लेकिन इस बदबख्त क्रौम के काइदीन की रूहानियत का ये आलम था कि :-

ترک دنیا بمرود آموزند

خویشتن سیم و غله اندوزند

इन नाम निहाद रूहानी पेशवाओं की हिर्स वाज़ (लालच) ने बैत-उल्लाह को दुआ का घर होने के बजाय “डाकूओं की खोह बना रखा था। (मर्कुस 11:15 ता 18) मुनज्जी आलमीन (मसीह) की ग़ैरत की आग शोला-ज़न हुई और आपने “हैकल में दाखिल हो कर उन सबको निकाल दिया जो हैकल में ख़रीद व फ़रोख्त कर रहे थे और सर्राफ़ों के तख्ते

<sup>8</sup> इस मुकाम में भी क्रौम यहूद के लिए सीगा वाहिद इस्तिमाल किया गया है।

और कबूतर फ़रोशों की चौकियां उलट दीं और उनसे कहा, लिखा है कि मेरा घर अक्वाम आलम के लिए दुआ का घर कहलाएगा मगर तुम उसे डाकूओं की खो बनाते हो।” (मर्कुस 11:15) क़सी-उल-क़ल्ब (قسي القلب) सरदार काहिन खुदा से इस क़द्र बागी हो गए थे कि अपनी इस्लाह करने के बजाय उल्टा “इब्ने-अल्लाह (मसीह) को हलाक करने का मौक़ा ढूढ़ने लगे।” (मर्कुस 11:18) क़ौम यहूद और उस के बागी पेशवाओं की रूहानियत इस क़द्र गिर चुकी थी कि वो चोरों, डाकूओं और भेड़ीयों की तरह हो गए थे। (यूहन्ना 10 बाब) उनकी हालत बेफल इंजीर के दरख़्त की मानिंद हो गई थी। (मत्ती 21:19) जिसका मुकाबला हज़रत मीकाह ने अपने ज़माने के क़ौम यहूद के रूहानी इफ़लास (ग़रीबी) से करके फ़रमाया था। कि इस क़ौम में रास्त बाज़ शख़्स शाज़ो नादिर (कम) ही मिलता है जिस तरह बे फल इंजीर में कोई “गुच्छा नहीं होता।” (7:1 ता 6, मत्ती 23 बाब) आप अपनी क़ौम की बड़ी भीड़ देखते थे और आपको लोगों पर तरस आता था क्योंकि वो उन भेड़ों की मानिंद जिनका चरवाहा ना हो खस्ता-हाल और परागंदा (बिखरे) थे। (मत्ती 9:36) इसी किस्म के खयालात इब्ने-अल्लाह (मसीह) के आखिरी अय्याम में आपके दिल में मुकज़िज़ब और मुकफ़िर क़ौम यहूद के रऊसा की बाबत लगातार आ रहे थे जब आप कोहे कलवारी को मस्लूब होने के लिए जा रहे थे तो “लोगों की एक बड़ी भीड़ और बहुत सी औरतें जो उस के वास्ते रोती पीटती थीं उस के पीछे पीछे चलीं” मुनज्जी आलमीन (मसीह) ने जो अल्फ़ाज़ अपनी ज़बान सदाक़त बयान से फ़रमाए वो साफ़ ज़ाहिर करते हैं कि गो यह सब गिर्ये वज़ारी, आह व नाला, बकाह व फ़गां आपकी खातिर हो रहा था ताहम इस नाज़ुक वक़्त में भी जब आप सलीब के बोझ के नीचे लढ़ खड़ा रहे थे आपको अपना खयाल मुतलक़ नहीं था बल्कि क़ौम इस्राईल के हश्र का खयाल आपको सता रहा था चुनान्चे आपने उन औरतों को इर्शाद फ़रमाया, “ऐ यरूशलेम की बेटियाँ मेरे लिए ना रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ। क्योंकि देखो वो दिन आते हैं जिनमें कहेंगे मुबारक हैं वो बाँझें और वो रहम जो बारवर ना हुए और वो छातियां जिन्होंने दूध ना पिलाया। उस वक़्त वो पहाड़ों से कहना शुरू करेंगे, कि हम पर गिर पड़ो और टीलों से कि हमें छिपा लो। क्योंकि जब हरे दरख़्त के साथ ऐसा करते हैं तो सूखे के साथ क्या कुछ ना किया जाएगा। (लूका 23:27 ता 31) मुनज्जी आलमीन (मसीह) के ये अल्फ़ाज़ हज़रत होसेअ नबी के सहीफ़े में वारिद हुए हैं। जहां ये रसूल क़ौम यहूद की रूहानी पस्ती और ज़िल्लत का हाल बयान करके इस्राईल की क़ौम की हालत पर वावेला करता है। (12:1 ता 8) ये अल्फ़ाज़ साबित करते हैं कि ऐसे नाज़ुक वक़्त में भी जब लोगों की

नज़र उनके अपने दुखों और मुसीबतों पर कुदरती तौर पर लगी होती है इब्ने-अल्लाह (मसीह) की निगाह अपने मसाइब और अज़ीयत पर नहीं बल्कि अपनी क्रौम के रुहानी इफ़लास (रुहानी गरीबी) और पस्ती पर थी। और आप क्रौम की हालत देखकर मुतास्सिफ़ (अफ़सोस करने वाले) थे।

जब हम कोह कल्वरी के बाक़ी दो मस्लूबों की हालत का मुनज्जी आलमीन (मसीह) की हालत के साथ मुकाबला करते हैं तो ये नुमायां फ़र्क हम पर फ़ौरन ज़ाहिर हो जाता है। उनकी नज़र उनके जिस्मानी अज़ाब और सज़ा की जानिब लगी है लिहाज़ा वो सलीब पर कराह कराह कर और दूसरों पर लानत करके जान तोड़ रहे हैं। (मती 27:24) लेकिन मुनज्जी आलमीन (मसीह) की नज़र आपके जिस्मानी दुखों पर नहीं थी बल्कि क्रौम इस्राईल की सरकशी और बर्गशतगी पर लगी थी। जब आपके हाथों में कील ठोंके जा रहे थे। आपने क्रौम इस्राईल के लिए दुआए मग़िफ़रत मांगी। (लूका 23:34) जब आप मस्लूब हुए तो आपको सलीब के जिस्मानी अज़ाब और शर्म की परवाना थी (इब्रानियों 12:2) बल्कि सलीब पर आपकी निगाह अपनी क्रौम बनी-इस्राईल के हसरतनाक अंजाम और उस के खौफ़नाक मुस्तक़बिल पर लगी थी। आप अपने दिल में खयाल फ़र्मा रहे थे कि इस क्रौम का क्या हश्र होगा जो खुदा के “अम्बिया को कोड़े मारती। शहर बशहर सताती, संगसार करती और मस्लूब और क़त्ल करती चली आई है।” (मती 23:29 ता 37) क्रौम उस की रुहानी पस्ती, और ज़बूनी की हालत को देखकर इब्ने-अल्लाह (मसीह) को बाईसवां (22) ज़बूर याद आया। क्योंकि क्रौम यहूद की मौजूदा हालत मज़मूर नवीस के ज़माने की हालत जैसी हो गई थी। पस आपने दोनों ज़मानों के क्रौमी ज़वाल में मुमासिलत देखकर अपनी ज़बान-ए-सदाक़त बयान से बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर कहा, एली, एली, लिमा शबक़तनी, यानी ऐ क्रौम इस्राईल के खुदा, ऐ क्रौम इस्राईल के खुदा, तूने अपनी क्रौम को क्यों छोड़ दिया? तूने इस क्रौम के सपुर्द ये काम किया था कि तेरे नाम और नजात को दुनिया की कुल अक्वाम तक पहुंचाए। लेकिन ये क्रौम ना सिर्फ़ अपने फ़र्ज़ अदा नहीं करती बल्कि तेरे मसीह को भी मस्लूब कर रही है। ऐ बाप तू इस क्रौम को माफ़ कर क्योंकि इस क्रौम के लोग नहीं जानते कि वो क्या कर रहे हैं? (लूका 23:34, मती 27:46 वग़ैरह)

अनाजील अरबा का मुतालआ ज़ाहिर कर देता है कि आँखुदावंद को मज़ामीर हिफ़ज़ थे। अगर आपको अपने दुखों और अज़ीयतों ही का खयाल होता तो आप दीगर

ज़बूरों की तिलावत फ़र्मा सकते थे। जो जिस्मानी अज़ीयत और अक़ूबत के वक़्त उनकी अपनी तसल्ली का बाइस हो सकते थे। मसलन आप जांकनी के मौक़े पर ज़बूर 23 के अलफ़ात को दोहरा सकते थे। “ख़ुदावंद मेरा चौपान है।.....मुझे कमी ना होगी।.....बल्कि ख़्वाह मौत के साये की वादी में से मेरा गुज़र हो मैं किसी बला से नहीं डरूंगा क्योंकि तू (ऐ ख़ुदावंद मेरे साथ है।.....मैं हमेशा ख़ुदावंद के घर में सुकूनत करूंगा।” लेकिन हज़रत इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने ना तो इस ज़बूर की और ना इस किस्म के किसी दूसरे ज़बूर की सलीब पर से तिलावत फ़रमाई क्योंकि मुनज्जी आलमीन (मसीह) को सलीब पर अपने जिस्मानी अज़ाब का ख़याल तक ना था बल्कि आपको अपनी क़ौम के इबरतनाक हश्र का ख़याल दामनगीर था। चूँकि इब्ने-अल्लाह (मसीह) मुजस्सम मुहब्बत थे और मुहब्बत अपनी ख़ुदी पर ध्यान नहीं करती। (1 कुरिन्थियों 13:5) पस इब्ने-अल्लाह (मसीह) सलीब पर अपने दुखों पर नहीं, बल्कि क़ौम इस्राईल के हसरतनाक अंजाम का ख़याल फ़र्मा रहे थे। मुक़द्दस पौलुस रसूल इस अजीब माजरे से मुतास्सिर हो कर फिलिप्पियों की कलीसिया को नसीहत करके फ़रमाता है, “हर एक अपने ही अहवाल पर नहीं बल्कि हर एक दूसरे के अहवाल पर भी नज़र रखे। वैसा ही मिज़ाज रखो जैसा मसीह येसू का भी था।” (फिलिप्पियों 2:4 ता 5) मुनज्जी आलमीन (मसीह) ने मौत की तल्खी और जानकनी की हालत में अपना ख़याल ना किया। (रोमीयों 15:3) और अपने अहवाल पर नज़र ना की बल्कि क़ौम इस्राईल का हश्र और मुस्तक़बिल आपकी नज़रों के सामने था जिस तरह गुज़श्ता ज़माने में वो मज़मूर नवीस के सामने था पस मज़मूर नवीस के हम-ख़याल हो कर आपने उस के अलफ़ाज़ को दुहराया और आया ज़ेर-ए-बहस की तिलावत करके फ़रमाया “एली, एली, लिमा शबक़तनी” चुनान्चे आबाए कलीसिया में से एक बुजुर्ग<sup>9</sup> लिखता है :-

“इस का मतलब ये था कि तूने क़ौम इस्राईल को क्यों छोड़ दिया कि वो तुझसे इस हद तक बर्ग़श्ता हो गई है कि तेरे बेटे को मस्लूब कर रही है।”

इधर मुनज्जी आलमीन (मसीह) को अहले-यहूद की बर्ग़श्तगी की वजह से (ज़बूर 22:1) याद आई। और इधर यहूदी क़ौम के ज़अमा और काइदीन इसी ज़बूर के अलफ़ाज़

<sup>9</sup> Commentary on St. Mark (Collection of the works of Fathers. By. Thomas Aquinas)

(ज़बूर 22:7, 8) में इब्ने-अल्लाह (मसीह) का मज़हका कर रहे थे। चुनान्चे इन्जील मती में वारिद है कि सरदार काहिन भी फ़कीहों और बुजुर्गों के साथ मिल के ठट्ठे से कहते थे, “उसने औरों को बचाया। अपने तई नहीं बचा सकता। इस ने खुदा पर भरोसा किया है। अगर वो इसे चाहता है तो अब इस को छुड़ाले।” (ज़बूर 37:41 ता 43, लूका 23:35) इब्ने-अल्लाह (मसीह) का दिल अहले-यहूद की बे-एतिक़ादी के बाइस पहले ही छन्ना पड़ा था। इन अल्फ़ाज़ ने दिल के ज़ख़्म पर नमकपाशी (नमक छिड़कना, तकलीफ़ देना) का काम किया। क्योंकि अब इस क्रौम के सरदार काहिन तक खुदा पर भरोसा रखने को उल्टा एक ताने का अम्र करार दे रहे थे। हालाँकि उनका फ़र्ज़ मन्सबी ये था कि ऐसी हालत में लोगों को खुदा पर भरोसा रखने की तल्कीन करते।

بسوخت عقل ز حیرت که ایں چه بوا العجیبی ست

पस आँखुदावंद ने “बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर फ़रमाया” ऐ बनी-इस्राईल के खुदा, ऐ बनी-इस्राईल के खुदा, तूने क्रौम इस्राईल को क्यों छोड़ दिया है कि इस के सरदार काहिन तक तुझसे इस कद्र बागी हो गए हैं कि तुझ पर भरोसा रखना भी मअयूब (एब वाला) बात खयाल करते हैं और तेरे मसीह को मलऊन गिरादान्ते हैं? मुकाबला करो (ज़बूर 69:9 वगैरह)

सरदार काहिनों ने सिर्फ़ ताने देने पर ही इक्तिफ़ा ना की बल्कि उन्होंने (ज़बूर 22) की मुख्तलिफ़ आयात में जिन मसाइब व अलाम (तकलीफ) का ज़िक्र है उनका आपको निशाना बना कर छोड़ा कि हदीका सल्ब पर आपकी बैरूनी और खारिजी हालत ऐन इस ज़बूर के मिस्ताक़ हो गई। मसलन सलीब पर आपके मुबारक हाथों और पांव को छेदा गया। (ज़बूर 22 आयत 16, मर्कुस 15:13, 14, 24) सलीब पर आपके जिस्म अतहर और हड्डियों को खींचा और ताना गया। (आयत 14, मती 27:35) आपके कपड़ों पर कुरआ डाला गया। (ज़बूर 22:18, व मर्कुस 15:24, यूहन्ना 19:23, 24) आपकी अज़ीयत की हालत में आपको ताका और घूरा गया। (ज़बूर 22:17, मती 27:43, लूका 23:34, 35) आपके दुश्मनों ने आपको दिल-ख़राश ताने सुनाए। (ज़बूर 22:7, 8, मती 27:39 ता 44) वगैरह-वगैरह। ये सब बातें ऐसी थीं कि कुदरती तौर पर आँखुदावंद के ज़हन में (ज़बूर 22:1) आई और आप ने इस की तिलावत फ़र्मा कर क्रौम यहूद की

बर्गशतगी पर इज़हार-ए-तास्सुफ़ (अफ़सोस) फ़रमाया और कहा, “ऐ क्रौम इस्राईल के खुदा, ऐ क्रौम इस्राईल के खुदा, तूने क्रौम इस्राईल को क्यों छोड़ दिया?”

मुनज्जी आलमीन (मसीह) की जो बैरूनी हालत सलीब पर थी उस की मुताबिक़त इस ज़बूर के साथ इस हद तक है कि आबाए कलीसिया में से एक बुजुर्ग टरटोलेन<sup>10</sup> कहता है कि :-

“ये ज़बूर मसीह के दुखों पर मुश्तमिल है।”

दौर-ए-हाज़रा में भी मसीही कलीसिया इस को मुबारक जुमे के रोज़ पढ़ती है जब वो मुनज्जी आलमीन (मसीह) की मुबारक मौत की यादगारी करती है और इब्रानियों के खत का मुसन्निफ़ आयात 22 ताआखिर का इतलाक़ इब्ने-अल्लाह (मसीह) पर करता है। क्योंकि ये ज़बूर उम्मीद और मुहब्बत के अल्फ़ाज़ पर खत्म होता है (2 बाब)

ये अम्र याद रखने के काबिल है, कि इस ज़बूर की किसी आयत में भी (ज़बूर 51) की तरह गुनाह का इकरार मौजूद नहीं। और ना इस की किसी आयत में दुश्मनों पर लानत की गई है पस अगर हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) ने अपनी जांकनी की हालत में तमाम के तमाम मज़मूर की तिलावत की भी हो तो जाये ताज्जुब नहीं। क्योंकि आपको ये एहसास था कि इस मज़मूर और यसअयाह नबी के सहीफ़े के खादिम यहोवा और किताब (हिकमत 12:12 ता 20) आयात में रास्तबाज़ के जिन दुखों का ज़िक्र है वो आपकी ज़ात-ए-कुदूसी सिफ़ात में बदर्जा अहसन पूरे हो रहे हैं।

हमने मर्हूम मौलवी साहब के सवाल का तश्फ़ी बख़्श जवाब सही उसूल-ए-तफ़सीर के मुताबिक़ देने की कोशिश की है। हमें उम्मीद है कि तमाम मुत्लाश्याने हक़ (हक़ की तलाश करने वाले) पर अब वाज़ेह हो गया होगा कि मुनज्जी कौनैन (मसीह) ने सलीब पर जान देते हुए आया ज़ेर-ए-बहस को क्यों पढ़ा? इस आया शरीफ़ा की मुन्दरिजा बाला तावील सिर्फ़ सही उसूल तफ़सीर पर मबनी है। ये तफ़सीर मज़मूर नवीस के खयालात का सही नक़शा है और 22वीं ज़बूर के क़राइन और सबाक़ व स्याक़ उस के हामी हैं। ये तफ़सीर आँखुदावंद के खयालात, कलिमात और जज़बात और मोतकिदात के मुताबिक़ है

<sup>10</sup> Ad Marcion iii

और आपकी रुहानी हालत और तजुर्बा, आपका हकीकी मंशा और मतलब आपका प्रोग्राम और तर्ज अमल सब इस तफ़्सीर की तस्दीक करते हैं। कुतुब मुक़द्दसा की ज़बान, अल्फ़ाज़ और मुहावरात से इस की ताईद होती है और इन्जील जलील की आयात-ए-मुहकमात जिनका फ़िक्र बाब दोम में किया गया है इस तफ़्सीर की मुअय्यिद (मुआविन, मदद करने वाला) हैं। पस हमारी मर्हूम की तावील की तरह तफ़्सीर बिल-राए नहीं है, बल्कि सही तफ़्सीर है जो सिर्फ सही उसूल पर मबनी है।

## इख़्तलाफ़-ए-क़िरआत

मौलवी सना-उल्लाह साहब बावजूद दावा हमादानी (सफ़ा 38) मसीहियत की कुतुब मुक़द्दसा से इस दर्जा ना-बलद (नावाक़िफ़) हैं कि उनको ये भी मालूम नहीं कि ये कुतुब किस ज़बान में लिखी गई थीं। और मुनाज़िर होने के बावजूद वो बिचारे इन ज़बानों से भी आशना नहीं। पस हम उनसे ये उम्मीद नहीं कर सकते कि वो इन्जील की मुख्तलिफ़ क़िरआतों और तर्जुमों से वाक़िफ़ हों। हम नाज़रीन की वाक़फ़ीयत की खातिर आयत ज़ेरे बहस की मुख्तलिफ़ क़िरआतों का ज़िक्र करते हैं।

**(अलिफ़)** आरामी क़िरआत, हम बाब दोम में बतला चुके हैं, कि आँखुदावंद की मादरी ज़बान आरामी थी। पस अस्ल इन्जील जो इस ज़बान में लिखी गई थी वो कलिमतुल्लाह (मसीह) के कलिमात तय्यिबात पर खासतौर पर रोशनी डालती है। इस इन्जील में ये आया शरीफ़ा यूं है<sup>11</sup> :-

“ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, मैं इस घड़ी के लिए पैदा हुआ था।”

ये ज़ाहिर है कि मौलवी साहब का एतराज़ इस क़िरआत पर सिरे से वारिद नहीं हो सकता। इस क़िरआत के साथ (यूहन्ना 12:27) के अल्फ़ाज़ का मुक़ाबला करो।

**(ब)** “ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे कैसा जलाल बख़शा।”

**(ज)** “ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे क्यों रुस्वा होने दिया।”

<sup>11</sup> See Lam sa, the Four Gospels.

मज़कूर बाला दोनों किरआतें किताब Mission and Message of Jesus के सफ़ा 196 पर दर्ज हैं आपका एतराज़ इन दोनों किरआतों पर भी वारिद नहीं हो सकता।

(द) एक और किरआत है जो यहूदी आलिम डाक्टर मॉंटी फ़ेअरी मर्हूम (Montefiore) ने अपनी तफ़सीर अनाजील सलासा पर लिखी है और वो ये है :-

“ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे क्यों तअन और तशनीअ का निशाना होने दिया।”

मर्हूम लिखते हैं कि इस किरआत को जर्मन नक्काद डाक्टर हारनेक दुरुस्त तस्लीम करता है। ये ज़ाहिर है कि मौलवी साहब का एतराज़ इस किरआत पर वारिद नहीं होता।

(ह) “ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?” हमने सुतूर बाला में साबित कर दिया है कि मौलवी साहब का एतराज़ जो आप इस किरआत पर करते हैं बातिल है क्योंकि आपने इस एतराज़ करने में हर सही उसूल-ए-तफ़सीर को ताक़-ए-निस्याँ (भूल जाना) पर रख दिया है।

چوں بشنوی سخن اہل دل گو کہ خطاست

سخن شناس نہ دلبرا خطا این جاست

## आया ज़ेरे बहस और मसअला कफ़ारा

मर्हूम सना-उल्लाह ने अपने एतराज़ में जो इस रिसाले के बाब अक्वल में नक़ल किया गया है। आया ज़ेर-ए-बहस “एली, एली, लमाशबक़तनी” को मसअला कफ़ारा से मुताल्लिक़ किया है।

हमें इस बात पर ताज्जुब आता है कि आप जैसे कहुना मश्क़ और साल ख़ूदा मुसन्निफ़ ने किस मन्तिक़ की रु से ये नतीजा निकाला कि ये आयत मसअला कफ़ारे से ताल्लुक़ रखती है। इस आयत में बल्कि सियाक़ व सबाक़ की पूरी इबारत और बाब में गुनाह या गुनाह के बोझ का या कफ़ारे का ज़िक़्र तक नहीं मिलता। अगर या बिलफ़ज़

मुहाल मौलवी साहब के एतराज़ को एक लम्हे के लिए तस्लीम भी कर लिया जाये कि “खुदा ने मसीह को तर्क कर दिया था।” तो भी हमको कहीं इस बात का नामोनिशान नज़र नहीं आता कि उस के तर्क कर देने का बाइस दुनिया की ना-फ़र्माणी और गुनाह था और कि खुदा बाप ने अपने बेटे को जहान के गुनाह की सज़ा यूँ दी कि उस को छोड़ दिया अगर आपका ये खयाल है तो आप मसीही कफ़ारे का मफ़हूम सिरे से नहीं समझे। मसीही अक़ीदा ये नहीं है कि मसीह को सलीब पर दुनिया के गुनाहों की सज़ा मिली बल्कि कफ़ारे का अक़ीदा ये है कि “मसीह हमारे गुनाहों के लिए मुआ।” (1 कुरिन्थियों 15:3) “मसीह बेदीनों की खातिर मुआ।” जब हम गुनेहगार ही थे। मसीह हमारी खातिर “मुआ” खुदा से उस के बेटे की मौत के वसीले से हमारा मेल हो गया। (रोमीयों 5:6, 8, 10 वगैरह) इन दोनों बातों में ज़मीन आस्मान का फ़र्क है। लेकिन मोअतरिज़ दुनिया के नूर की दुश्मनी में रोशनी से दूर जा पड़े हैं।

अगर इस आया शरीफा का ताल्लुक मसअला कफ़ारे से होता तो मुक़द्दस पौलुस या मुक़द्दस पतरस या मुक़द्दस यूहन्ना या इंजीली मजमूआ में से कोई मुसन्निफ़ तो इस को अपनी मुख्तलिफ़ तहरीरों या तक़रीरों में मसअला कफ़ारे के सबूत में पेश करता। इन्जील जलील की कुतुब मुक़द्दसा में से किताब आमाल अल-रसूल और मक्तुबात की एक एक सतर पढ़ लो तुमको इस किस्म का कोई फ़िक्रह या कलिमा नहीं मिलेगा। जिससे इस बातिल नतीजे को तक़वियत मिल सके। इन सबकी माअनी-खेज़ खामोशी ये साबित कर रही है कि आया ज़ेर-ए-बहस का मसअला कफ़ारा के साथ दौर का वास्ता भी नहीं है। जब मोअतरिज़ के इस्तिदलाल की बुनियाद इन्जील जलील की किसी एक आयत पर भी नहीं तो उनकी ज़िद और हट धर्मी में क्या शक रह गया। هاتو

برهانكبه ان كنهه صادقين

## आया ज़ेर-ए-बहस और मसअला तजस्सुम

हमने बाब अक्वल में मौलवी साहब के एतराज़ात को नक़ल किया है कि जो आपने इस आया शरीफा पर किए हैं। आप अपनी किताब “इस्लाम और मसीहियत” में बड़े तुमतराक़ (शानो-शौकत, गुरूर) के साथ कहते हैं :-

“हम पादरी बरकत-उल्लाह साहब एंड पार्टी और उन की मार्फत कुल मसीही दुनिया से सवाल करते हैं कि इन्जील मती का ये फ़िक्रह कि “मसीह ने सलीब पर चिल्ला कर जान दी।” इस चिल्ला कर जान देने के वक़्त भी मसीह मुजस्सम खुदा था या नहीं और उस में और खुदा में कोई मुगाइरत तो ना थी फिर चिल्ला कर जान किस ने दी? यहां पहुंच कर हम तो रुक जाते हैं आप ही बताईए कि वो कौन था?”

“अगर तुम ज़बान सोज़

(सफ़ा 66)

इन अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर है कि मौलवी साहब ये खयाल करते हैं कि मसीही अक़ीदा ये है कि नाउज़ु-बिल्लाह खुदा मस्लूब किया गया। एतराज़ ज़ाहिर करता है कि ये बेचारे निरे मौलवी ही हैं और मसीही अक्काइद के इल्म और तारीख से बिल्कुल कोरे हैं। उनको क्या मालूम कि उन्नीस सौ साल से जम्हूर कलीसिया-ए-जामा ने इस किस्म के नज़रिये को कुफ़्र करार दे दिया हुआ है। मौलाना ने मसअला तजस्सुम और उलूहियत मसीह को समझा ही नहीं। हमने माना कि आप इन मसाइल को नहीं मानते लेकिन आपको उन मसाइल (जिन पर आप एतराज़ करते हैं) के समझने की कम अज़ कम कोशिश तो करनी चाहिए। आप मेरी किताबों को जहां इस मसाइल का ज़िक्र किया गया है ग़ौर से दुबारा पढ़ें तब आप पर वाज़ेह हो जाएगा कि ये एतराज़ मसीहियत पर सिरे से वारिद ही नहीं होता। इस सिलसिले में हम मोअतरज़ीन की तवज्जोह बिलखुसूस अपनी किताब “तौज़ीह-उल-अक्काइद” के पहले चंद अबवाब की जानिब मबज़ूल करते हैं।

अगर मर्हूम ने मेरी किताब “दीन फ़ित्रत, इस्लाम या मसीहियत” और रिसाला “मसीहियत की आलमगीरी” (जिनका जवाब वो लिखने बैठे थे) बग़ौर मुतालआ किया होता तो उनको मालूम हो जाता है कि हम किस मअनी में खुदा को “ग़ालिब-अला-अल-कुल (غالب على الكل) या कुदरतों और ताक़तों का मालिक मानते हैं। वो खुद देख लेते कि उनका ये माया नाज़ एतराज़ (जिसका बतकरार इआदा किया जाता है) बिल्कुल बेमाअनी रह जाता है लिहाज़ा हम आपकी तवज्जोह फिर अक्वल-उल-ज़िक्र किताब के सफ़ा 34 और मोख़्खर-उल-ज़िक्र किताब के सफ़ा 31 की तरफ़ मबज़ूल करने पर ही इक्तिफ़ा करते

हैं। عاقل را اشاره کافی است हमने उनकी किताब में बहतेरा दूंडा कि कहीं उन्होंने इन सफ़हों के मज़मून पर कुछ लिखा हो। लेकिन आपने हर जगह इस अहम और बुनियादी नुक्ते को नज़र-अंदाज कर दिया है। जिसका मतलब ये है कि उनसे इस का कोई जवाब बन नहीं पड़ा और या “तबइयत की कमज़ोरी और अवारिज़ (बीमारीयां, दुख, मर्ज़) की कस्रत” ने उनको अपने मुखातिब के नज़रिये को ये समझने की फ़ुर्सत नहीं दी थी।

अगर किताब “इस्लाम और मसीहिहियत” खाकसार की किताबों के जवाब में लिखी गई थी तो फिर क्या वजह है कि मौलवी साहब ने इन अहम मसाइल कफ़ारा और तजस्सुम का ज़िक्र करते वक़्त हमारी तस्नीफ़ कर्दा किताबों को नज़र-अंदाज करके दीगर मुनाज़िरीन की कुतुब को लेकर उन पर मुफ़स्सिल बहस की है? मसलन उलूहियत मसीह की बहस में आपने एक क़दीम मसीही गीत पर (जो डेढ़ हज़ार साल हुए लिखा गया था और जिसका ज़िक्र तक मेरी कुतुब में नहीं आता) बहस की है। (सफ़ा 56 ता 57) और पादरी फ़ंडर की किताब मीज़ान-उल-हक़ मत्बूआ 1892 ई. का (सफ़ा 59) पादरी हेइरस की किताब का (सफ़ा 56 ता 57) रईस-उल-मुनाज़रिन पादरी अब्दुल हक़ साहब के रिसाले “इस्बात-उल-तस्लीस का (सफ़ा 61 ता 63, 201 वगैरह) रिसाला उखुव्वत का (सफ़ा 65) मर्हूम डिप्टी अब्दुल्लाह आथम साहब की जंग मुक़द्दस का (सफ़ा 67) इक़्तिबास करके इनकी इबारतों पर एतराज़ किए हैं। इसी तरह कफ़ारे की बहस में आपने पादरी गोल्ड सेक की किताब (सफ़ा 120 ता 121) रिसाला अल-मायदा का (सफ़ा 123) मर्हूम पादरी टॉमस हाइल की किताब का (सफ़ा 123 ता 124) का ज़िक्र के उन पर एतराज़ किए हैं और फिर खाकसार से इनके जवाब का मुतालिबा करते और मुझे मुखातिब हो कर कहते हैं कि :-

“पादरी बरकत-उल्लाह साहब, बक़ौल गूँगे की बोली गूँगे की माँ समझे आप ही बतलाईए वगैरह वगैरह।”

“सफ़ा 124”

“पादरी गोल्ड सेक का ये क़ौल पादरी बरकत-उल्लाह साहब को भी मुसल्लम होना चाहिए। इसलिए अब पादरी साहब हमारे सवालात ठंडे दिल से सुनकर उन पर ग़ौर करें वगैरह-वगैरह (सफ़ा 120) पादरी अब्दुल हक़ साहब चूँकि मन्तिकी तक़रीर

किया करते हैं। इसलिए हम उनसे पूछना चाहते हैं वगैरह वगैरह।” (सफ़ा 61)

नाज़रीन खुदारा आप ही बतलाईए मौलवी साहब इन अस्थाब का जवाब लिखने बैठे थे या खाकसार की किताबों का जिनको आपने कफ़ारे और तजस्सुम की बहस के दौरान में बिल्कुल नज़र-अंदाज कर दिया है? आप तो हमको आदाब-ए-मुनाज़रा सिखाने चले थे। (सफ़ा 12, 14, 15) क्या मुनाज़रा और मुबाहिसे के आदाब यही हैं? अगर आप हमारी कुतुब को नज़र-अंदाज ना करते तो हमको आपसे उनको दुबारा बग़ौर मुतालआ करने की नागवार दरख्वास्त ना करना पड़ती। और अगर आपने मेरी दीगर कुतुब को भी देख लिया होता तो आपको अपनी उम्र की आखिरी मंज़िल में चंद एक बोसीदा एतराज़ात को अपनी किताब में बार-बार दोहराने की ज़रूरत ना पड़ती। मसलन अगर आप ने मेरा रिसाला “इसाईल का नबी या जहान का मुनज्जी?” (जिसका ज़िक्र मैंने “मसीहियत की आलमगीरी” के दीबाचे में किया था) देखा होता तो आप (मर्कुस 7:24 ता 30 और मती 15:21 ता 28) पर एतराज़ करने की बार-बार ज़हमत ना उठाते। (सफ़ा 22, 157 व 205 वगैरह) फिर अगर आपने मेरी किताब “कलिमतुल्लाह की ताअलीम” (जिसका ज़िक्र “मसीहियत आलमगीरी” के दीबाचे (सफ़ा 6) में किया गया है) पढ़ा होता। तो आपको मसीहियत और शरीअत पर बार-बार बहस ना करना पड़ती। (सफ़ा 13, 88 ता 92, 137 वगैरह)

## मौलवी साहिबान से अपील

हमने मौलवी सना-उल्लाह साहब और उन के हम-खयालों को आया ज़ेर-ए-बहस की सही तफ़सीर सुना कर उन पर इतमाम-ए-हुज्जत कर दी है पस हम अपना फ़र्ज समझते हैं कि हम उनसे फिर एक बार अपील करें कि वो इस अदबी, तज़हीक और तौहीन के लिए और उन नासेज़ा कलिमात के लिए जो उन्होंने ने हज़रत कलिमतुल्लाह व रूह-अल्लाह (मसीह) के हक़ में अपनी मन घड़त तावील के ज़ेर-ए-असर रवा रखते हैं बारगाहे-ए-एज़दी में खुशू व खुजूअ (आजिज़ी) के साथ तौबा करके खुदा से माफ़ी के तलबगार हों। रोज़ हश्र जिस खुदा के सामने वो जाएंगे वो उनको मुखातिब करके तंबीया करता है :-

أَلَمْ تَر إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنْ يَضْرَبُوا بِأَلْيَدِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْسِدُونَ  
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ إِذَا الْأَغْطَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ فِي الْحَبِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ

**तर्जुमा :** यानी क्या तुमने उन लोगों के हाल पर नज़र नहीं की जो खुदा की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं किधर को बहके चले जा रहे हैं? ये वो लोग हैं जो किताब को झुटलाते हैं और उन किताबों और सहीफों को भी झुटलाते हैं जो हमने अपने रसूलों और नबियों की मार्फत भेजे हैं। सो आखिरकार उनको इस झुटलाने का नतीजा मालूम हो जाएगा। जब कि तौक उनकी गर्दनो में होंगे। और तौक के इलावा जंजीरें, पानी पिलाने के लिए घसीटते हुए उनको जलते पानी में ले जाएंगे। फिर आग में झोंकें जाएंगे। (सूरह मोमिन आयात 73 ता 75)

मौलवी साहब ने फ़रमाया है “यहूदी मसीह के हक़ में अपनी नाराज़गी का इज़हार ऐसे संगीन लफ़्ज़ों में करते थे कि :-

"اگر گوئیم زباں سوزہ"

सफ़ा 39

लेकिन इस पर भी आपने नाशाइस्ता अल्फ़ाज़ अपने क़लम से निकाले। आप ना सिर्फ़ यहूद के संगीन लफ़्ज़ों को बल्कि मिर्ज़ाए क़ादियानी को भी जो बक़ौल आपके “दुरुश्त क़लामी में महारत नामा रखते थे।” अहले-हदीस 15 मई 1942 ई. मात कर गए। क्योंकि जहां तक हमको उनकी तस्नीफ़ात पढ़ने का नागवार इतिफ़ाक़ हुआ है सबने अपने एतराज़ात को अल्फ़ाज़ की शक़ल (सफ़ा 107) तक ही महदूद रखा था। किसी के हज़यान ने आपकी तरह इस से तजावुज़ करके एक घिनौनी “तस्वीर की शक़ल” (सफ़ा 107) इख़्तियार ना की थी।

हम पैरवी कैस ना फ़र्हाद करेंगे

हम तर्ज़-ए-जिन्नो और ही ईजाद करेंगे

मौलवी साहब ने अपनी किताब “इस्लाम और मसीहियत” में मसीह मस्लूब की एक निहायत भौंडी और दिल आज़ार तस्वीर शाएअ की थी। (सफ़ा 109) जिस पर हमने

अखबार उखूवत लाहौर में सदाए एहतिजाज बुलंद की थी। लेकिन मौलवी सना-उल्लाह साहब अपने शर्मनाक फ़ेअल पर नादिम होने के बजाय,

“उज़्र गुनाह और बदतर अज़गना” निहायत बेबाकी से फ़ख्रिया कहते हैं “इस तस्वीर में मसीह को मौलवियाना शकल में दिखाया गया है। मसलन दाढ़ी घनी, मूँछें शरई और सर पर बाल रखे हुए अच्छी सालेहाना (नेक) शकल नज़र आती है।”

(अहले-हदीस 26 फरवरी जून 1942 ई.)

कादियानीयों ने बर्दी खयाल कि मबादा मौलवी सना-उल्लाह मसीह की तौहीन में हमसे सबक़त ले जाये कादियान के सरकारी गजेट अल-फ़ज़ल में इस को शाएअ कर दिया क्योंकि *بِحکم اصل بیت اعرف فی البیت* (घर वाले घर की बात जानते हैं) ये दोनों एक दूसरे के बातिन से वाक़िफ़ हैं। इस तर्ज़-ए-अमल से दोनों अखबारों के एडीटरों ने इस मकरूह हरकत से अपना और दीगर नाम निहाद मुसलमानों का दिल खुश करके हज़रत रूह-अल्लाह से क़सावत (बेरहमी) क़ल्बी का सबूत दे दिया।

मौलवी सना-उल्लाह साहब भूल गए कि अंग्रेज़ी हफ़ता-वार अखबार पीर्सन ने अपनी 10 फरवरी 1934 ई. की इशाअत में रसूल अरबी, बीबी आईशा और बिलाल की तसावीर शाएअ की थीं जिस पर हिन्दुस्तान के तूल व अर्ज़ में कुहराम मच गया था। तमाम इस्लामी जराइद ने (जिसमें आप भी शामिल थे) क़ियामत सुगरा बरपा कर दी थी। इस वावेला का नतीजा ये हुआ था कि गर्वनमेंट ने इस अखबार के मज़मून को ज़ब्त (काबू) कर लिया था। क्योंकि इस से मुसलमानों के दिल मजरूह हुए थे। लेकिन मसीही कलीसिया अवामुन्नास में ज़बरदस्त हैजान और बेचैनी पैदा करके गर्वनमेंट से सज़ा का मुतालिबा करने का वतीरा इख़्तियार नहीं करती।

लतीफ़ तबा को लाज़िम है सोज़-ए-ग़म भी लतीफ़  
बुलंद आतिश कल का कभी धुवां ना रहा

हम अपने आका और मौला रब्बना अल-मसीह के उस्वा हसना पर चल कर मर्हूम मौलवी सना-उल्लाह साहब और आँजहानी मिर्जाए कादियानी की ज़ियारत के हक़ में खुदा-ए-गफ़ूर-रहीम की बारगाह में दस्त बंदुआ हैं कि खुदा इन सबको माफ़ फ़रमाए और वो कअर-ए-मज़िल्लत से निकल कर नजात अबदी हासिल करें। आमीन सुम्मा आमीन।

मर्हूम मौलवी सना-उल्लाह साहब हदीस की हुज्जियत के काइल और इमाम बुखारी के पुजारी थे। इमाम साहब की *ح الكتب بعد از کتاب الله* (कुरआन के बाद सहीह किताब बुखारी) के चौबीसवें पारे किताब-उल-लिबास में चौदह हदीसों मौजूद हैं जिनमें तस्वीरों की मज़म्मत और तस्वीर बनाने वालों की सख्त सज़ा का ज़िक्र है जिसको पढ़ कर बदन पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लिखा है कि रसूल-अल्लाह (मुहम्मद स.) ने इर्शाद फ़रमाया कि “जिस घर में कुत्ता हो या तस्वीरें हों वहां रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते।” और कि “जो लोग तस्वीरें बनाते हैं क्रियामत के रोज़ उनको अज़ाब दिया जाएगा।” अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि “मैंने रसूल-अल्लाह (मुहम्मद स.) से सुना कि सबसे ज़्यादा सख्त अज़ाब क्रियामत के दिन तस्वीरें बनाने वालों को दिया जाएगा।” मौलवी साहब ने तो ये खयाल किया था कि ये मकरूह तस्वीर उनकी “नजात का ज़रीया” होगी। (सफ़ा अलिफ़) लेकिन मुन्दरिजा बाला अहादीस की रु से वो जहन्नम के शदीद तरीन अज़ाब के मुस्तहिक़ हो गए। इस किस्म के ज़ोव-अल-जहीन (*ذووالجبین*) कुरआन व हदीससे मुनहरिफ़ हो कर ये खयाल ना करें कि वो मुवाखिज़ा खुदावंदी से छूट जाएंगे। चुनान्चे अब्दुल्लाह बिन उमर रिवायत करते हैं कि “एक मर्तबा जिब्राईल ने हज़रत से आने का वाअदा किया और बहुत देर हो गई। रसूल खुदा को बड़ा इंतज़ार हुआ। आखिरकार आप घर से बाहर निकले तो वहां जिब्राईल मिले। आपने देर से आने की शिकायत की। जिब्राईल ने कहा मुझे इसलिए घर में आने का ताम्मुल हुआ कि जहां तस्वीर हो या कुत्ता हो वहां हम नहीं आते।” जब रहमत के फ़रिश्ते रसूल-अल्लाह (मुहम्मद स.) के घर में ना गए तो इन लोगों की क्या हकीकत है कि इनको जहन्नम का शदीद तरीन अज़ाब ना मिलेगा? मौलवी साहब “इस्लाम और कुरआन मजीद से मुदाफ़अत।” (सफ़ा अलिफ़) का आक्रिबत ना अंदेशी से निराला तरीका ईजाद किया। (सफ़ा 107) और दूसरों का शुगून बिगाड़ने की खातिर अपने लिए आक्रिबत का अज़ाब मोल ले लिया। इस में वो आँजहानी मिर्जाए कादियानी (ग़फ़रुल्लाह जुनुब *غفر الله ذنوبه*) के नक़शे क़दम पर चले। (रिव्यू आफ़

रिलिजियंस, कादियान बाबत फरवरी 1942 ई. सफ़ा 55) और कुरआन को भूल गए।  
 نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ वो खुदा को भूल गए। पस खुदा भी उनको  
 भूल गया। बेशक वो फ़ासिक हो गए। (सूरह तौबा आयत 68)

समझाएँ जाएंगे तुम्हें हर लहज़ा हर घड़ी  
 मानो ना मानो इस का तुम्हारा इख्तियार है

## मौलवी सना-उल्लाह और मसीह की दुआ-ए-मग़ि़रत

मौलवी सना-उल्लाह साहब एक जगह लिखते हैं :-

“मसीह को दुश्मनों ने सताया और आपने ऐसे वक़्त में माफ़ किया जब कि आप बदला ना ले सकते थे। मगर रसूल अरबी (मुहम्मद स.) ने अपने ज़ालिम दुश्मनों को ऐसी हालत में माफ़ किया जब कि आप अबरोए चश्म के एक इशारे से सब का क़त्ल-ए-आम करा सकते थे।”

تواضع زگردن فرازاں نکوست  
 گداگر تواضع کند خوئے اوست

(सफ़ा 165)

हम इस बात से क़त-ए-नज़र करते हैं कि आपने हज़रत रूह-अल्लाह (मसीह) की शान में यहां और (सफ़ा 48) और दीगर मुक़ामात में मिर्जाए कादियानी की तरह सब व शितम रवा रखा है। मौलाना का मतलब ये है कि सिर्फ़ उसी शख्स की दुआ-ए-मग़ि़रत खुदा के हुज़ूर काबिल-ए-कुबूल और इन्सान के नज़दीक काबिल-ए-तहसीन है जिसमें बदला लेने की ख़्वाहिश और ताक़त हो। और इस के बावजूद वो बदला ना ले कलिमतुल्लाह (मसीह) में जज़्बा इंतिक़ाम तो नहीं था। क्योंकि आप इस को ना सिर्फ़ मकरूह बल्कि हराम समझते थे। (मत्ती 5 बाब, 18 बाब, मर्कुस 11:25 वग़ैरह) गो आप बदला लेने पर कुद़त और इख्तियार रखते थे। (मत्ती 26:53, यूहन्ना 10:17, फ़िलिप्पियों 2:8 वग़ैरह)

पस आपकी ये शर्त भी पूरी हो गई लेकिन आपका मफ़रूज़ा जो इस एतराज़ की बिना है ग़लत है। देखिए जब रसूल-अरबी (मुहम्मद स.) और मुसलमानों पर मक्की ज़माने में तरह तरह के मज़ालिम ढाए गए तो आप उनको मुनज्जी आलमीन (मसीह) का नमूना दिखला कर तसल्ली देते और फ़र्माते “तुमसे पहले एक नबी थे। उनकी क़ौम ने उस को इस क़द्र मारा कि खून आलूद कर दिया और वो नबी अपने मुँह पर से खून पोंछते जाते और फ़र्माते जाते थे, ऐ अल्लाह मेरी क़ौम की ख़ताओं को बख़्श दे क्योंकि वो नहीं जानते।” (बुखारी जिल्द सोम सफ़ा 249) जब आपको जंग उहद में कुफ़्फ़ार के हाथों शिकस्त मिली और आपका सर और चेहरा ज़ख्मी किया गया और आपके दाँत तोड़ दिए गए क्या आपका सब्रो बर्दाश्त उस ज़माने में आपके फ़ारसी शेअर के मिस्टाक़ था और आपकी तवाज़अ “गदायाना” थी।

मौलवी साहब ग़लत फ़र्माते हैं कि रसूल अरबी (मुहम्मद स.) ने फ़तह मक्का के रोज़ अपने दुश्मनों को माफ़ किया। उस रोज़ आपने सियासी तदबीर और दूर अंदेशी से काम लेकर साकनीन मक्का को पनाह दी थी। हकीक़त ये है कि आपने बदतरीन दुश्मनों को माफ़ नहीं किया था बल्कि उन खून हदर कर दिया और हुक्म दिया था कि उनको जहां पाओ मार डालो। इन दुश्मनों में मर्द और औरतें दोनों शामिल थीं। क्या आँहज़रत ने जंग बद्र की फ़तह के बाद अबु-जहल, नज़्र बिन हारिस, उक़्बा बिन मईत, वगैरह बदतरीन दुश्मनों को माफ़ कर दिया था? क्या कअब बिन अशरफ़, हई बिन अख़्तब, सलाम बिन अबी अलहकीक़ वगैरह माफ़ किए गए थे? क्या यहूद के क़बीला बनी कुरैज़ा के तमाम मर्द क़त्ल नहीं किए गए थे? अगर मौलवी साहब तारीख़ मुहम्मदी से इस दर्जा नावाक़िफ़ हैं तो हम उनकी तवज्जोह मशारिक़-उल-अनवार की अहादीस नंबर 878, 879, 1814, 1891, 1892, वगैरह की तरफ़ मबज़ूल करते हैं। मौलवी साहब ज़रूर इन वाक़ियात से वाक़िफ़ हैं। लेकिन अपने फ़तवे को भूल गए कि “मुंसिफ़ मिज़ाज लोग मज़हबी मबाहिस में खासकर इख़फ़ाए वाक़ियात करना (वाक़ियात छुपाना) जुर्म अज़ीम समझते हैं।” (सफ़ा 23)

इन्ज़ील जलील और बुखारी शरीफ़ दोनों हज़रत इब्ने-अल्लाह (मसीह) की दुआ-ए-मग़िफ़रत का ज़िक़र करती हैं जो आपने अपने दुश्मनों के हक़ में की थी। हमें यकीन है कि वो अब भी आस्मान पर मर्हूम मौलवी साहब जैसे दुश्मनों के लिए दुआ-ए-मग़िफ़रत

करते हैं। हमारी भी यही दुआ है कि खुदा मर्हूम के गुनाहों को माफ़ फ़रमाए और उस पर अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

اللهم المفتح عليه ابواب رحمتك

हैनरी मार्टिन स्कूल

अलीगढ़

25 मार्च 1957 ई.

**(बरकत-उल्लाह)**